Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

UNIVERSAL

Record File

संस्कृत साहित्य सभा
(M.S.)

File 2

File No. _____

Name _____

Address _____

Subject _____

Serial No. _____

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

संस्कृत साहित्य सौरभम्

लेखकः —
सत्यव्रत शास्त्री

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

प्राक्कथन

जनसाधारण में संस्कृतभाषा के विषय में एक धारणा बद्धमूल हो चुकी है और वह यह कि संस्कृत बहुत क्लिष्ट है। संस्कृत के सार्वत्रिक ह्रास की पृष्ठभूमि में इस धारणा का बहुत बड़ा हाथ रहा है। पर यह धारणा कितनी भ्रान्त और निर्मूल है यही सिद्ध करने के हेतु यह हमारा प्रयास है। इसमें हमें कितनी सफलता मिली है यह इस पुस्तिका के प्रयोक्ता और पढ़ने वाले ही बता सकते हैं। इसी कारण बालक संस्कृत से बहुत डर जाता है। वह इस भाषा को बहुत कठिन समझता है। हमारा उद्देश्य इस पुस्तक में यही रहा है कि संस्कृत को फिरसे सरल रूप में प्रस्तुत किया जाय जिससे कि नन्हें विद्यार्थी भी इसके प्रति आकर्षित हों और इस देवभाषा का परिचय प्राप्त कर सकें।

दिल्ली - वैशाख पूर्णिमा

संस्कृत का तुच्छ सेवक -
सत्यव्रत शास्त्री

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

प्रथम: पाठ:

स: पठति ।

ता: पठत: ।

ते पठन्ति ।

स: लिखति ।

ता: लिखत: ।

ते लिखन्ति

स: पठति लिखति च ।

ता: पठत: लिखत: च ।

ते पठन्ति लिखन्ति च ।

२- नय शब्द :— प्रथमान्त / मा बालक

स: वह (पुरुष) पढ — पढ़ना

ता: वे दोनों (पुरुष) मा बालक लिख — लिखना

ते सब (पुरुष) च — प्रथमान्त

२. समास के नियम :—

पठति लिखति

पठत: लिखत:

पठन्ति लिखन्ति

३. पर का काम :—

संस्कृत में अनुवाद ~~का~~ का नियम :—

वे सब लिखते हैं ।

वह पढ़ता है ।

वे दोनों लिखते हैं ।

वे सब पढ़ते हैं ।

वह लिखता है ।

वे दोनों पढ़ते हैं ।

CC-0. In Public Domain, S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

प्राक्कथन

जनसाधारण में संस्कृतभाषा के विषय में एक धारणा बद्धमूल हो चुकी है और वह यह कि संस्कृत बहुत क्लिष्ट है। संस्कृत के सार्वत्रिक ज्ञान की पृष्ठभूमि में इस धारणा का बहुत बड़ा हाथ रहा है। पर यह धारणा कितनी भ्रान्त और निर्मूल है यही सिद्ध करने के हेतु यह हमारा प्रयास है। इसमें हमें कितनी सफलता मिली है यह इस पुस्तिका के पढ़नेवाले और पढ़ानेवाले ही बता सकते हैं। इसीलिए बालक संस्कृत से बहुत डर जाता है। यह इस भाषा को बहुत कठिन समझता है। हमारा उद्देश्य इस पुस्तक में यही रहा है कि संस्कृत को सरल से सरल रूप में प्रस्तुत किया जाय जिससे कि नन्हें विद्यार्थी भी इसके प्रति आकर्षित हों और इस देवभाषा का परिचय प्राप्त कर सकें।

दिल्ली - वैशाख पूर्णिमा

संस्कृत का तुच्छ सेवक -
सत्यव्रत शास्त्री

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

ॐ

प्रथमः पाठः

स: पठति ।
तौ पठत: ।
ते पठन्ति ।

स: लिखति ।
तौ लिखत: ।
ते लिखन्ति ।

स: पठति लिखति च ।
तौ पठत: लिखत: च ।
ते पठन्ति लिखन्ति च ।

२- नये शब्द :— प्रश्नवाचक

स: वह (पुरुष) पठ — पढ़ना
तौ वे दोनों (पुरुष) लिख — लिखना
ते वे सब (पुरुष) च — और

२. समझने के लिए :—

पठति पठत: पठन्ति
लिखति लिखत: लिखन्ति

३. घर का काम :—

संस्कृत में अनुवाद कीजिए :—

वे सब लिखते हैं ।
वह पढ़ता है ।
वे दोनों लिखते हैं ।
वे सब पढ़ते हैं ।
वह लिखता है ।
वे दोनों पढ़ते हैं ।

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Duplicate

Serial No. 1785

Roll No. 80069

PANJAB UNIVERSITY
(SEAL)

MATRICULATION EXAMINATION

SESSION 1958

This is to certify that Pritam Dass son of Shri Beli Ram and of the B.K.High School, Ghee Mandi, Amritsar passed the Matriculation Examination of this University held in March 1958 and was placed in the Second Division obtaining 484 marks.

Passed also in One Additional Subject.

Date of Birth First October One Thousand Nine Hundred and forty only (1.10.1940)

CHANDIGARH
12th January 1959.

Sd/----------
ASSISTANT REGISTRAR(EXAMS).

ATTESTED TO BE A TRUE COPY

SIGNATURE

SEAL

DATED . .1959.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

द्वितीयः पाठः

सा पठति ।
ते पठतः ।
ताः पठन्ति

सा नमति ।
ते नमतः ।
ताः नमन्ति

सा चलति ।
ते ~~न~~ अपि चलतः ।
ताः अपि चलन्ति ।

सा चलति ~~च~~ न पठति ।
ते चलतः पठतः च ।
ताः न लिखन्ति न च पठन्ति ।

सा नमति । ताः न नमन्ति
ते नमतः । तौ नमतः ।
ते चलन्ति । ताः न चलन्ति ।

अभ्यासः

१. शब्दः —
सा — वह (स्त्री या कन्या) नम् — नमस्कार करना ।
ते — वे दोनों (कन्याएं या स्त्रियां) चल — चलना ।
ताः — वे सब (कन्याएं या स्त्रियां) अपि — भी ।

२. ~~रिक्त स्थानों के लिये~~ रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये —
१. ..... पठतः । ४. ते ..... चलन्ति च ।
२. ..... लिखन्ति । ५. ते पठथः लिखथः ..... ।
३. ता ..... । ६. तौ अपि ..... ।
और का काम

३. अनुवाद कीजिये :—
१. वे सब (स्त्रियां) नमस्कार करती हैं ।
२. वह (बालक) लिखता है, वह (कन्या) नहीं लिखती ।
३. वे दोनों भी चलते हैं ।
४. सब पढ़ते हैं लिखते हैं और चलते हैं ।

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Duplicate

Serial No. 1785

Roll No. 80069

PANJAB UNIVERSITY
(SEAL)

MATRICULATION EXAMINATION

SESSION 1958

This is to certify that Pritam Dass son of Shri Beli Ram and of the B.K.High School, Ghee Mandi, Amritsar passed the Matriculation Examination of this University held in March 1958 and was placed in the Second Division obtaining 484 marks.

Passed also in One Additional Subject.

Date of Birth First October One Thousand Nine Hundred and forty only (1.10.1940)

CHANDIGARH
12th January 1959.

Sd/----------
ASSISTANT REGISTRAR(EXAMS).

ATTESTED TO BE A TRUE COPY

SIGNATURE

SEAL

DATED . .1959.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

द्वितीय: पाठ:

सा पठति ।
ते पठत: ।
ता: पठन्ति

सा नमति ।
ते नमत: ।
ता: नमन्ति

सा चलति ।
ते ~~चलत~~ उपवि चलत: ।
ता: उपवि चलन्ति ।

सा चलति ~~ते~~ न ~~चलति~~ पठति ।
ते चलत: पठत: च ।
ता: न लिखन्ति न च पठन्ति ।

सा नमति । सा: न नमति ।
ते नमत: । ते न लिखत: ।
ते चलन्ति । ता: न चलन्ति ।

उपपाठ

१. नये शब्द :—
सा — वह (स्त्री या कन्या) नम् — नमस्कार करना ।
ते — वे दोनों (कन्याएं या स्त्रियां) चल — चलना ।
ता — वे सब (कन्याएं या स्त्रियां) उपवि — भी ।

२. ~~एकवचन के स्थान~~ द्विवचन स्थानों की पूर्ति कीजिये :—
१ ..... पठत: ४. ते ..... चलन्ति च ।
२ ..... लिखन्ति ५. ते पठथ: लिखथ: ... ।
३. ता ..... ६. ते उपवि ।

३. उपवाद का अर्थ :—
१. वे सब (स्त्रियां) नमस्कार करती हैं ।
२. वह (बालक) लिखता है, वह (कन्या) नहीं लिखती ।
३. वे दोनों भी चलते हैं ।
४. सब पढ़ते हैं लिखते हैं और नमस्कार करते हैं ।

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Duplicate

Serial No. 1785 Roll No. 80069

PANJAB UNIVERSITY
(SEAL)

MATRICULATION EXAMINATION

SESSION 1958

This is to certify that Pritam Dass son of Shri Beli Ram and of the B.K.High School, Chee Mandi, Amritsar passed the Matriculation Examination of this University held in March 1958 and was placed in the Second Division obtaining 484 marks.

Passed also in One Additional Subject.

Date of Birth First October One Thousand Nine Hundred and forty only (1.10.1940)

CHANDIGARH
12th January 1959.

Sd/-----------
ASSISTANT REGISTRAR(EXAMS).

ATTESTED TO BE A TRUE COPY

SIGNATURE

SEAL

DATED . .1959.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

द्वितीय: पाठ:

सा पठति ।
ते पठत: ।
ता: पठन्ति

सा नमति ।
ते नमत: ।
ता: नमन्ति

सा चलति ।
ते ~~चलत~~ अपि चलत: ।
ता: अपि चलन्ति ।

सा चलति ~~[illegible]~~ न ~~चलति~~ पठति ।
ते चलत: पठत: च ।
ता: न लिखन्ति न च पठन्ति ।

सा नमति । ता: न नमति ।
ते नमत: । ते लिखत: ।
ते चलन्ति । ता: न चलन्ति ।

अभ्यास

१. नये शब्द :—

सा — वह (स्त्री या कन्या) नम् — नमस्कार करना ।
ते — वे दोनों (कन्याएं या स्त्रियां) चल — चलना ।
ता — वे सब (कन्याएं या स्त्रियां) अपि — भी ।

२. ~~[illegible]~~ रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये :—

१ ..... पठत: ४. ते ..... चलन्ति च ।
२ ..... लिखन्ति ५. ते पठत: लिखत: ..... ।
३. ता ..... ६. ता अपि ।

३. अनुवाद कीजिये :—

१. वे सब (स्त्रियां) नमस्कार करती हैं ।
२. वह (बालक) लिखता है, वह (कन्या) नहीं लिखती ।
३. वे दोनों भी चलते हैं ।
४. सब पढ़ते हैं लिखते हैं और नमस्कार करते हैं ।

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Duplicate

Serial No. 1785 Roll No. 80069

PANJAB UNIVERSITY
(SEAL)

MATRICULATION EXAMINATION

SESSION 1958

This is to certify that Pritam Dass son of Shri Beli Ram and of the B.K.High School, Ghee Mandi, Amritsar passed the Matriculation Examination of this University held in March 1958 and was placed in the Second Division obtaining 484 marks.

Passed also in One Additional Subject.

Date of Birth First October One Thousand Nine Hundred and forty only (1.10.1940)

CHANDIGARH
12th January 1959.

Sd/-----------
ASSISTANT REGISTRAR(EXAMS).

ATTESTED TO BE A TRUE COPY

SIGNATURE

SEAL

DATED . .1959.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri
CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

तृतीय: पाठ:

त्वम् हसासि ।
युवाम् हसथ: ।
यूयम् हसथ ।

त्वम् वदसि ।
युवाम् वदथ: ।
यूयम् वदथ ।

किम् त्वम् पठसि ?
किम् युवाम् लिखथ: ?
किम् यूयम् नमथ ?

त्वम् वदसि लिखसि हसासि च ।
किम् युवाम् अपि लिखथ: वदथ: च ?
यूयम् न पठथ न चलथ न च हसथ ।
ते न लिखन्ति परम् युवाम् लिखथ: ।

१,५२ पाठ

१- वर्ण शब्द :— त्वम् — त्
युवाम् — तुम दोनों
यूयम् — तुम सब

हस् — हंसना
वद् — बोलना
पठ् — पढ़ना

२ लकारों के अर्थ :-

हसासि	हसथ:	हसथ
वदसि	वदथ:	वदथ

३. पाठ का काम :—

अनुवाद कीजिये :—

१. तुम दोनों पढ़ते हो ।
२. वे सब लिखते हैं ।
३. तुम बोलते हो पर वह लिखता है ।
४. तुम दोनों मत नमस्कार करते हो ।
५. तुम सब चलते हो तथा बोलते हो ।

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

S.No..59059

Roll No. 80069

(SEAL)

PANJAB UNIVERSITY

DETAILED MARKS CERTIFICATE FOR PASS CANDIDATES

MATRICULATION EXAMINATION 1958.

Name...Pritam Dass son of Shri Beli Ram

S.NO.	Subjects	Marks obtained	Maximum Marks
1.	English	126	200
2.	Mathematics or Arithmetic & Household Accounts	130	200
3.	i) History	45	90
	ii) Geography	27	60
4.	Science	64	150
5.	Hindi	92	150
	Total	484	

(Four Hundred and eighty four only)

This certificate is valid only if produced along with Original certificate

Line below marks indicates failure in the subject and marks not included in the grand total.

CHANDIGARH
May 16,1958.

sd/---J.R.AGNIHOTRI
REGISTRAR

ATTESTED TO BE A TRUE COPY

SIGNATURE

SEAL

DATED . .1959.

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

पुरुष: पठ:

;यहम् स्वादामि ।
;यावाम् स्वादाव: ।
वयम् स्वादाम: ।

;यहम् जाग्रवाणि ।
;यावाम् जाग्रव: ।
वयम् जाग्राम: ।

वयम् तं सदा पठाम: स्वलाम: ;यामि ।
तौ सदा पठत: न स्वलत: न च स्वादत: ।
;यावाम् चलाव: ;यामि हसाव: ;यामि ।
;यहम् न जाग्रवाणि युवाम् जाग्रथ: ।
तौ ;याम जाग्रत: तं ;याम जाग्रत: ।
वयम् न हसाम: परम् तं हसन्ति स्व ।

;यहयात्

2. क्रम स्वच्छ: —

;यहम् — अहं
;यावाम् — इमं दासं
वयम् — इमं सर्वं
स्वाद् स्वाद्

(जग्) जाग्र — जागृ
सदा — इमशा
तं — तौ
स्व — इदं

2. समास: क्रम:—

स्वादामि स्वादाव: स्वादाम:
जाग्रवाणि जाग्रव: जाग्राम:

3. पद का काम:—

(क) रिक्त स्थानों को पूर्ति कीजिये :—

1. ;यहम् ... पठामि ... लिखामि ।
2. ;यावाम् ... स्व ... न ।
3. अहम् त्वम् ... ?
4. ... सदा स्व हसाम: ।

(ख) ;यूयवाद का, लक्ष्य :—

1. इमं सर्वं ज्ञान ... ...

S.No..59059

Roll No. 80069

(SEAL)

PANJAB UNIVERSITY

DETAILED MARKS CERTIFICATE FOR PASS CANDIDATES

MATRICULATION EXAMINATION 1958.

Name...Pritam Dass son of Shri Beli Ram

S.NO.	Subjects	Marks obtained	Maximum Marks
1.	English	126	200
2.	Mathematics or Arithmetic & Household Accounts	130	200
3.	i) History	45	90
	ii) Geography	27	60
4.	Science	64	150
5.	Hindi	92	150
	Total	484	

(Four Hundred and eighty four only)

This certificate is valid only if produced along with Original certificate

Line below marks indicates failure in the subject and marks not included in the grand total.

CHANDIGARH
May 16,1958.

sd/---J.R.AGNIHOTRI
REGISTRAR

ATTESTED TO BE A TRUE COPY

SIGNATURE

SEAL

DATED . .1959.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

चतुर्थ: पाठ:

अहम् खादामि ।
आवाम् खादाव: ।
वयम् खादाम: ।

अहम् जाग्रामि ।
आवाम् जाग्राव: ।
वयम् जाग्राम: ।

वयम् न सदा श्रमेण: श्रमान: अपि ।
ते सदा पठन्ति न खलन्ति न च खादन्ति ।
आवाम् चलाव: अपि हसाव: अपि ।
अहम् न जाग्रामि युवाम् जाग्रथ: ।
सा अपि जाग्रति: ते अपि जाग्रत: ।
वयम् न हसाम: परम् ते हसन्ति एव ।

अहम्

2. क्रम रूपाणि :—

अहम् — सा
आवाम् — हम दोनों
वयम् — हम सब
खाद् — खाना

(गम्) जाग्र — जाना
सदा — हमेशा
ते — वे
एव — ही

2. समास के रूप :—

खादामि — खादाव: खादाम:
जाग्रामि — जाग्राव: जाग्राम:

3. पद का काम :—

(क) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये :—

1. अहम् ... पठामि ... लिखामि ।
2. आवाम् ... एव ... न ।
3. त्वम् त्वम् ... ?
4. ... सदा एव हसाम: ।

(ख) अनुवाद का रूप :—

1. हम सब जाते हैं । 2. तुम क्या हंसते हो ? 3. वे दोनों

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

S.No..59059

Roll No. 80069

(SEAL)

PANJAB UNIVERSITY

DETAILED MARKS CERTIFICATE FOR PASS CANDIDATES

MATRICULATION EXAMINATION 1958.

Name...Pritam Dass son of Shri Beli Ram

S.NO.	Subjects	Marks obtained	Maximum Marks
1.	English	126	200
2.	Mathematics or Arithmetic & Household Accounts	130	200
3.	i) History	45	90
	ii) Geography	27	60
4.	Science	64	150
5.	Hindi	92	150
	Total	484	

(Four Hundred and eighty four only)

This certificate is valid only if produced along with Original certificate

Line below marks indicates failure in the subject and marks not included in the grand total.

CHANDIGARH
May 16,1958.

sd/---J.R.AGNIHOTRI
REGISTRAR

ATTESTED TO BE A TRUE COPY

SIGNATURE

SEAL

DATED . .1959.

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

Digitized by Sarayu Trust. Foundation and eGangotri

(कर्तरि).

बालः धावति ।
बालौ धावतः ।
बालाः धावन्ति ।

ब्राह्मणः पठति ।
ब्राह्मणौ पठतः ।
नद्यौ चलतः ।
नद्यः धावतः ।
मेघाः गर्जन्ति ।
बालाः क्रमन्ति ।

फलम् पतति ।
फले पततः ।
फलानि पतन्ति ।

जलम् वहति ।
~~बालकः हसति~~ ।
वदनम् जपति ।
नेत्रे स्फुरतः ।
मित्रे हसतः ।
कमलानि विकसन्ति ।
पामराणि पतन्ति ।

पुरुषाः

१. नाम शब्दः —

बाल	— बालक	धाव	— दौड़ना
नर	— मनुष्य	(जि) जेय	— जीतना
पद	— घोड़ा	स्फुर	— फड़कना
मेघ	— बादल	विकस	— खिलना
ब्राह्मण	— पंडित	पत्	— गिरना

२. लकारं प्रति रूपाणि :—

बाल:	बालौ	बालाः	फलम्	फले	फलानि
पद:	पदौ	पदाः	कमलम्	कमले	कमलानि
मेघ:	मेघौ	मेघाः	पामरम्	पामरौ	पामराणि

३. घर का काम :

(क) पुरुषाः क्रियाः :— १. बालक गाता है, २. दो घोड़े दौड़ते हैं, ३. विद्यार्थी पढ़ते हैं, ४. दो मनुष्य हँसते हैं, ५. मित्र गिरता है, ६. पक्षी उड़ते हैं।

(ख) बालयोः को शुद्ध करके लिखिए :—

१. पदः : धावतः, २. [illegible] : पठन्ति, ३. [illegible] : पठति, ४. [illegible]

CC-0.In Public Domain. S.N. Shastri Collection

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

S.No..59059

Roll No. 80069

(SEAL)

PANJAB UNIVERSITY

DETAILED MARKS CERTIFICATE FOR PASS CANDIDATES

MATRICULATION EXAMINATION 1958.

Name...Pritam Dass son of Shri Beli Ram

S.NO.	Subjects	Marks obtained	Maximum Marks
1.	English	126	200
2.	Mathematics or Arithmetic & Household Accounts	130	200
3.	i) History	45	90
	ii) Geography	27	60
4.	Science	64	150
5.	Hindi	92	150
	Total	484	

(Four Hundred and eighty four only)

This certificate is valid only if produced along with Original certificate

Line below marks indicates failure in the subject and marks not included in the grand total.

CHANDIGARH
May 16,1958.

sd/---J.R.AGNIHOTRI
REGISTRAR

ATTESTED TO BE A TRUE COPY

SIGNATURE

SEAL

DATED . .1959.

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

(कर्तरि).

बालः धावति ।
बालौ धावतः ।
बालाः धावन्ति ।

ब्राह्मणः पठति ।
ब्राह्मणौ पठतः ।
ब्राह्मणाः पठन्ति ।

फलम् पतति ।
फले पततः ।
फलानि पतन्ति ।

जलम् वहति ।
~~बालक एकवचनं~~ ।
लोचनम् जयति ।
नेत्रे स्फुरतः ।
मित्रे हसतः ।
कमलानि विकसन्ति ।
पुष्पाणि पतन्ति ।

पुरुषाः

१. नाम शब्दः —

बाल	बालक	धाव	दौड़ना
नर	मनुष्य	(जि) जय	जीतना
पुरुष	घोड़ा	स्फुर	फड़कना
मेघ	बादल	विकस	खिलना
ब्राह्मण	पढ़ना	पत्	गिरना

२. लकारों के तिङन्त :—

बालः	बालौ	बालाः	फलम्	फले	फलानि
पुरुषः	पुरुषौ	पुरुषाः	कमलम्	कमले	कमलानि
मेघः	मेघौ	मेघाः	पुष्पम्	पुष्पे	पुष्पाणि

३. घर का काम :

(क) पुरुषवाद के तिङन्त :— १. बालक शरारत करता है, २. दो घोड़े दौड़ते हैं, ३. राजा पढ़ते हैं और दो मनुष्य हँसते हैं, ४. तीन गिरता है, ५. पाँच फड़कता है।

(ख) वाक्यों को शुद्ध कर के लिखें :—

१. पुरुषः धावन्ति, २. ~~[illegible]~~ पठति, ३. लोचनम् पठन्ति, ४. नरौ हसन्ति।

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

From:-

The Headmaster,
BALMOKAND KHATRI HIGH SCHOOL,
(Ghee Mandi)Amritsar.

Dated May 20,1958.

CERTIFIED that Pritam Dass Roll No. 80069 son of Shri Beli Ram matriculated from this school in the year 1958. He secured 484 marks and was placed in the Second Division. He was obedient, respectful and well-behaved. He was a good student and never gave me any chance for complaint. He bore a good moral conduct and character.

He took an active part in games and other extra-mural activities of the school. He comes of a respectable family and his date of birth as per this school record is First October, One Thousand nine hundred and forty (1-10-1940)

Wherever he goes, he carries my good wishes with him.

Sd/---Dev Raj,
Headmaster,
B.K. HIGH SCHOOL,
Ghee Mandi,Amritsar.

Attested to be a true copy

Signature

Seal

Dated . .1959.

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

तृतीय:

~~मनुष्य~~: पाठः

करण

रथेन: पादेन चलति ।
मनुष्य: पादाभ्याम् चलति ।
अश्व: पादैः चलति ।

बालः हस्तेन पत्रम् लिखति ।
नरः कर्णाभ्याम् शब्दम् शृणोति ।
गजः दन्तैः भारम् वहति ।

वयम् नेत्राभ्याम् पश्यामः ।
जलेन जीवनम् भवति ।
जीवाः शृङ्गेन जीवन्ति ।
यूयम् कर्णाभ्याम् शृणुथ ।
मनुष्याः मुखेन वदन्ति खादन्ति च ।
किम् गोपालः नेत्रेण काणः अस्ति ?
मोहनः कर्णाभ्याम् बधिरः अपि अस्ति ।
कृषकः दात्रेण केदारम् लुनाति ।
वृषभौ हलेन क्षेत्रम् कर्षतः ।
चालकः यानेन यानम् चालयति ।
छात्राः पुस्तकैः विद्यालयम् गच्छन्ति ।
सूर्येण दीपेन च प्रकाशः भवति ।

शब्दार्थाः

2. नये शब्द :- रथः - रथ
पाद - पाँव
कर्ण - कान
बाधिर - बहिरा
कृषक: - किसान
वृषभ - बैल
यान - गाड़ी
कृष - खोदना
शृङ्ग - सींग

2. तृतीया के रूप :-

बालेन	बालाभ्याम्	बालैः
रामेण	रामाभ्याम्	रामैः
बालरेण	बालराभ्याम्	बालरैः
फलेन	फलाभ्याम्	फलैः

3. घर का काम :—

अनुवाद करो :— 1. कर्म मनुष्य दो पावों से चलता है ।
2. कान से बहरा मनुष्य अच्छा नहीं लगता है ।
3. लाल झण्डा से रथ का मार्ग है ।
4. राम एक हाथ से रथ को मारता दोनों हाथों से रथ को चलाता है ।

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection.

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

अष्टमः पाठः

सम्प्रदान

नृपः ब्राह्मणाय धनम् यच्छति ।
नृपः ब्राह्मणाभ्याम् धनम् यच्छति ।
नृपः ब्राह्मणेभ्यः धनम् यच्छति ।
धनम् दानाय परोपकाराय च भवति ।
याचकाः याचकेभ्यः अन्नम् यच्छन्ति ।
छात्राः ज्ञानाय विद्यालयम् गच्छन्ति ।
बालौ भोजनाय भोजनालयम् यावतः ।
अहम् जलाय कूपम् गच्छामि ।
कृषकः वृषभाभ्याम् धान्यार्थं यानयति ।
जनकः पुत्राभ्याम् पुस्तकं यानयति ।
सज्जनाः परोपकाराय एव जीवन्ति ।
हिरण्यम् कुण्डलाय भवति ।
गृहस्थः काकेभ्यः बलिम् यच्छति ।
परमेश्वराय नमः । शिवायेभ्यः स्वस्ति ।
इन्द्राय स्वाहा । मल्लः मल्लाय पत्रम् ।

पर्यायाः

१. नये शब्दः :- परोपकार - दूसरों की भलाई
याचक - भिखारी
कूपक - कुआँ
हिरण्यक - सोना
कुण्डल - कान का आभूषण
पत्रम् - चिट्ठी
स्वाहा - देवताओं को भोजन
दा (यच्छ) - देना
जीव् - जीना

२. नाम के आगे के रूप :-

रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
बालाय	बालाभ्याम्	बालेभ्यः
याचकाय	याचकाभ्याम्	याचकेभ्यः

३. घर का काम :-

(क) नाम चतुर्थ्यै :- बालाभ्याम्, जलाय, धनम्, नमः, स्वाहा ।

(ख) अनुवाद कीजिये :- १. वह सदा परोपकार के लिये जीता है ।
२. हम भोजन के लिये ग्राम को जाते हैं । ३. नाकर घोड़ों के लिये घास लाता है । ४. पिता दो पुत्रों के लिये पुस्तक देता है ।
५. सभी लोग निर्धनों को भोजन देते हैं ।

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

नवम : पाठ :

अपादान

वृक्षात् पत्राणि पतन्ति ।
वृक्षाभ्याम् पत्राणि पतन्ति ।
वृक्षेभ्यः पत्राणि पतन्ति ।
बालकाः ग्रामात् विद्यालयम् गच्छन्ति ।
अश्वारोहौ अश्वाभ्याम् पतितः ।
छात्राः क्रीडायाः नगरात् बहिः यान्ति ।
अहम् अत्र पठनाय दूरात् आगच्छामि ।
युवाम् भोजनाय ग्रामात् कुत्र गच्छथः ।
लोकाः ग्रामेभ्यः तत्र उत्सवाय गच्छन्ति ।
नगरेभ्यः अपि लोकाः यान्ति तत्र गच्छन्ति ।
अरक्षकाः लोकान् चौरेभ्यः रक्षन्ति ।
किम् दासाः कूपात् जलम् न आनयन्ति ।
हिमालयात् नद्याः प्रभवन्ति ।
ग्रामयात् वृश्चिकाः भवन्ति ।
नृपः प्रासादात् लोकान् पश्यति
चैत्रात् पूर्वं = फाल्गुनः भवति
पथिकाः ग्रामात् ग्रामम् गच्छन्ति ।

अपादान

१. रेखांकित शब्द :- अश्वारोहः घुड़सवार च ग्रामेभ्यः - गाँवों
क्रीडायाः - खेल वृश्चिकः - बिच्छू
अरक्षकः - सिपाही प्रासादात् - महल
नद्यः - बड़ी नदी प्रभवन्ति - उत्पन्न होना

२. उत्तरानुसार लिखिये :- वृक्षात् वृक्षाभ्याम् वृक्षेभ्यः
अश्वात् अश्वाभ्याम् अश्वेभ्यः
ग्रामात् ग्रामाभ्याम् ग्रामेभ्यः

३. पद परिचय :- (क) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये :- १. अश्वारोहः ---- पतति । २. वृक्षेभ्यः पत्राणि ---- न पतन्ति । ३. किम् दासः ---- जलम् न आनयति ? ४. ---- वृश्चिकाः भवन्ति । ५. वयम् ---- नगरम् गच्छामः ।

(ख) अनुवाद कीजिये :- सिपाही लोगों की चोरों से रक्षा करते हैं । फाल्गुन चैत्र से पहिले आता है । अत्र पठनाय दूरं नास्ति यहाँ पढ़ने के लिये दूर नहीं है । ग्राम बाहर विद्यालय है । भोजनालय चाचाजी से दूर नहीं है ।

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

दशम: पाठ:

सम्बन्ध

कोकस्य वर्ण: कृष्ण: भवति।
काकयो: वर्ण: कृष्ण: भवति।
काकानाम् वर्ण: कृष्ण: भवति।
शुकानाम् वर्ण: हरित: भवति।
बकानाम् वर्ण: श्वेत: भवति।
मयूरस्य वर्ण: नील: भवति।
~~पिकस्य~~ वर्ण: पीत: भवति।
कूपस्य जलम् मधुरम् भवति।
समुद्रस्य जलम् क्षारम् भवति।
~~नृपस्य सेवका: लोकान् रक्षन्ति।~~
भारतीयानाम् चौरस्य: भयम् भवति।
सज्जनानाम् दुर्जनेभ्य: भयम् भवति
नृपस्य सेवका: लोकान् रक्षन्ति।
हस्तयो: दश नखा: भवन्ति।
भारतम् वर्षम् कृषकाणाम् देश: अस्ति।
धनिका: फलानाम् रसम् पिबन्ति।
निर्धना: कूपस्य शीतलम् जलम् पिबन्ति।
पिकानाम् जातानि मधुराणि भवन्ति।
कपोतस्य पक्षौ कोमलौ भवत:।
संसारस्य जनक: परमेश्वर: अस्ति।
अस्मभ्यम्

2. पर्यायवाची:— काक: — वायस — कृष्ण: — काला
शुक — तोता — हरित — हरा
बक — बगुला — नील: — नीला
कपोत — कबूतर — पीत: — पीला
पिक — कोयल — क्षार — खारी — अस्ति — है

2. लिङ्ग के अनुसार :—

कोकस्य	कोकयो:	कोकानाम्
रामस्य	रामयो:	रामाणाम्
फलस्य	फलयो:	फलानाम्

3. पद का काम :— (क) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये :—

1. .... वर्ण: हरित: भवति। 2. धनिका: .... रसम् ....
3. पिकानाम् .... मधुराणि भवन्ति। 4. सज्जनानाम् .... भयम् ....
4. हस्तयो: .... नखा: भवन्ति।

(ख) 1. इस दो कूप का ठंडा जल पीते हैं। 2. राम का पिता भोजन खाता है।
3. पक्षी का रंग काला नहीं होता है। 4. मयूर का रंग काला होता है।
5. क्या दो नौका का रंग काला होता है?

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

सम्बन्ध

काकस्य वर्णः कृष्णः भवति ।
काकयोः वर्णः कृष्णः भवति ।
काकानाम् वर्णः कृष्णः भवति ।
शुकानाम् वर्णः हरितः भवति ।
बकानाम् वर्णः श्वेतः भवति ।
नृपस्य वर्णः नीलः भवति ।
श्यामस्य वर्णः पीतः भवति ।
कूपस्य जलम् मधुरम् भवति ।
समुद्रस्य जलम् क्षारम् भवति ।
~~नृपस्य सेवकाः लोकान् रक्षन्ति ।~~
भीरुकानाम् चौरस्य भयम् भवति ।
सज्जनानाम् दुर्जनस्य भयम् भवति ।
नृपस्य सेवकाः लोकान् रक्षन्ति ।
हस्तयोः दश नखाः भवन्ति ।
भारतम् वर्षम् कृषकाणाम् देशः अस्ति ।
भानेकाः फलानाम् रसम् पिबन्ति ।
निम्नगाः कूपस्य शीतलम् जलम् पिबन्ति ।
पिकानाम् गीतानि मधुराणि भवन्ति ।
कपोतस्य पक्षौ कोमलौ भवतः ।
संसारस्य जनकः परमेश्वरः अस्ति ।
अस्मभ्यम्

2. समशब्दः — काक — कौवा, कृष्ण — काला
शुक — तोता, हरित — हरा
बक — बगुला, नील — नीला
कपोत — कबूतर, पीत — पीला
पिक — कोयल, क्षार — खारा
अस्ति — है

2. समस्त करिये :-

काकस्य	काकयोः	काकानाम्
रामस्य	रामयोः	रामाणाम्
फलस्य	फलयोः	फलानाम्

3. घर का काम :- (क) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये :-
१. .... वर्णः हरितः भवति । २. चीनिकाः .... रसम् ....
३. पिकानाम् .... मधुराणि भवन्ति । ४. सज्जनानाम् ..... भयम् ——।
५. हस्तयोः .... नखाः भवन्ति ।

(ख) १. इस दो कूपों का ठंडा जल पीते हैं । २. राम का पिता भोजन खाता है ।
३. पक्षियों का रंग गोरा होता है । ४. मछली का रंग काला नहीं होता है ।
५. क्या दोनों कौवों का रंग काला नहीं है ?

CC-0, In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

आधुनिकरण

फलानि वृक्षा सन्ति ।
फलानि वृक्षयोः सन्ति ।
फलानि वृक्षेषु सन्ति ।

शुकः पञ्जरके आस्ते ।
शुकौ पञ्जरकयोः स्तः ।
शुकाः पञ्जरकेषु सन्ति ।

वने सिंहाः वसन्ति । मृगाः अपि तत्र वसन्ति । मीनाः नदेषु वसन्ति । ग्रीष्मे कूपानाम् जलम् शीतलम् भवति । तटाकानाम् जलम् शिशिरे शीतलम् भवति । वसन्ते पुष्पाणि विकसन्ति । पुष्पेषु मधुरम् रसम् भ्रमराः पिबन्ति । चातकाः ग्रीष्मे हिमजलम् पिबन्ति । कृषकाः हेमन्ते इक्षुदण्डानाम् रसम् पिबन्ति । मम हस्तयोः पुस्तके स्तः । किम् तव नयनयोः तृणानि सन्ति ?

सूर्यः आकाशे भ्रमति । चन्द्रः अपि आकाशे भ्रमति । मृगाः तटाकस्य तटे जलम् पिबन्ति । मनुष्याः गृहेषु वसन्ति, खगाः नीडेषु, सर्पाः च बिलेषु । दुग्धे घृतम् भवति । कार्तिकपूजा संध्ये बलम् आस्ते ।

अभ्यास

२. वर्ण शब्दः — पञ्जरक - पिंजरा नीड - घोंसला
मीन - मछली स्तः - (वे दो, वे हैं)
हिम - बर्फ सन्ति - (वे सब) वे हैं
इक्षुदण्ड - गन्ना विकसन्ति - खिलना

२. रिक्त स्थान के लिये :—
वृक्ष वृक्षयोः वृक्षेषु
नर नरयोः नरेषु
फल फलयोः फलेषु

३. घर का काम :— के, शब्दों को वाक्यों में प्रयोग कीजिये।
बिलेषु, ग्रीष्मे, विकसन्ति, हिमजलम्, हस्तयोः ।

(ख) अनुवाद कीजिये :—
१. शिव हिमालय पर रहता है । २. क्या पक्षी घोंसलों में नहीं रहते ? ३. मेरे पिताजी अम्बाला नगर में रहते हैं । ४. पंजाब प्रदेश के लोग तलवार में प्रसिद्ध हैं । ५. पाठक लड़के पर चलते हैं (गाँव में लोग सज्जन होते हैं ।

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

एकादश: पाठ:

अभ्यास

फलानि वृक्षे सन्ति ।
फलानि वृक्षयो: सन्ति ।
फलानि वृक्षेषु सन्ति ।

शुक: पञ्जरके प्राप्ति ।
शुकौ पञ्जरकयो: स्त: ।
शुका: पञ्जरकेषु सन्ति ।

वने सिंहा: वसन्ति । मृगा: अपि तत्र वसन्ति । मीना: नदीषु वसन्ति । ग्रीष्मे कूपानाम् जलम् शीतलम् भवति । तटाकानाम् जलम् शीतम् शीतलम् भवति । वसन्ते पुष्पाणि विकसन्ति । पुष्पेषु मधुरम् रसम् भ्रमरा: पिबन्ति । चातका: ग्रीष्मे हिमजलम् पिबन्ति । कृषका: हेमन्ते इक्षुदण्डानाम् रसम् पिबन्ति । मम हस्तयो: पुस्तके स्त: । किम् तव नयनयो: तृणानि सन्ति ?

सूर्य: प्राकाशे भ्रमति । चन्द्र: अपि आकाशे भ्रमति । मृगा: तटाकस्य तटे जलम् पिबन्ति । मनुष्या: गृहेषु वसन्ति, खगा: नीडेषु, सर्पा: च बिलेषु । दुग्धे घृतम् भवति । कार्तिकमासे सर्वे जना: प्रसन्ना भवन्ति ।

अभ्यास

१. नये शब्द :- पञ्जरक - पिंजरा — नीड - घोंसला
मीन - मछली — स्त: - (वे दो) हैं
मम - मेरा, तव - तेरा हेम - बर्फ़ — सन्ति - (वे सब) हैं
इक्षुदण्ड - गन्ना — विकसन्ति - खिलना

२. वचनभेद के लिये :-

वृक्ष	वृक्षयो:	वृक्षेषु
नर	नरयो:	नरेषु
फल	फलयो:	फलेषु

३. घर का काम :- (क) ऊपर की वाक्यों में प्रयोग कीजिये :-
विकसन्ति, ग्रीष्मे, विकसन्ति, हिमजलम्, हस्तयो: ।

(ख) अनुवाद कीजिये :-
१. शिव हिमालय पर रहता है । २. क्या पक्षी घोंसलों में नहीं रहते ? ३. मेरे पिताजी अम्बाला नगर में रहते हैं । ४. पञ्जाब प्रदेश के लोग संसार में प्रसिद्ध हैं । ५. ~~पक्षी~~ पथिक सड़क पर चलते हैं । ग्रामों में लोग सज्जन होते हैं ।

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

एकादश: पाठ:

अभ्यास

फलानि वृक्षा सन्ति ।
फलानि वृक्षयो: सन्ति ।
फलानि वृक्षेषु सन्ति ।

शुक: पञ्जरके अस्ति ।
शुकौ पञ्जरकयो: स्त: ।
शुका: पञ्जरकेषु सन्ति ।

वने सिंहा: वसन्ति । मृगा: अपि तत्र वसन्ति । मीना: नदीषु वसन्ति । ग्रीष्मे कूपानाम् जलम् शीतलम् भवति । तटाकानाम् जलम् शिशिरे शीतलम् भवति । वसन्ते पुष्पाणि विकसन्ति । पुष्पेषु मधुरम् रसम् भ्रमरा: पिबन्ति । चातका: ग्रीष्मे हिमजलम् पिबन्ति । कृषका: हेमन्ते इक्षुदण्डानाम् रसम् पिबन्ति । मम हस्तयो: पुस्तके स्त: । किम् तव नयनयो: तृणानि सन्ति ?

सूर्य: अपि आकाशे भ्रमति । चन्द्र: अपि आकाशे भ्रमति । मृगा: तटाकस्य तटे जलम् पिबन्ति । मनुष्या: गृहेषु वसन्ति, रङ्गा: गृहेषु, सर्पा: च बिलेषु । दुग्धे घृतम् भवति । कलियुगे संघे बलम् अस्ति ।

अभ्यास

१. नये शब्द:— पञ्जरक - पिंजरा — नीड - घोंसला
मीन - मछली — स्त: - (वे दो) हैं ।
जल - तोय — हिम - बर्फ — सन्ति - (वे सब) हैं
इक्षुदण्ड - गन्ना — विकस् - खिलना

२. वचनों के लिये:— वृक्ष — वृक्षयो: — वृक्षेषु
नर — नरयो: — नरेषु
फल — फलयो: — फलेषु

३. शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिये:—
बिलेषु, ग्रीष्मे, विकसन्ति, हिमजलम्, हस्तयो: ।

(ख) अनुवाद कीजिये:—

१. शिव हिमालय पर रहता है । २. क्या पक्षी घोंसलों में नहीं रहते ? ३. मेरे पिता जी अम्बाला नगर में रहते हैं । ४. पञ्जाब पुरुषों के लाल संसार में प्रसिद्ध हैं । ५. पथिक सड़क पर चलते हैं । ग्रामों में लोग सज्जन होते हैं ।

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

द्वादशः पाठः

(सम्भाषण, पत्रम्)

श्यामः

मोहनः — हे राम! तव विद्यालयः कुत्र अस्ति?

रामः — मित्र श्याम! मम विद्यालयः ग्रामे अस्ति। अहम् तत्र प्रतिदिनम् पठनाय गच्छामि। मम सहोदरः अपि तत्र एव पठति यत्र अहम् पठामि।

श्यामः — भो राम! त्वम् विद्यालयम् कथम् गच्छसि? पादाभ्याम् यानेन वा?

रामः — हे श्याम! यथा त्वम् पादाभ्याम् एव विद्यालयम् गच्छसि, तथा एव अहम् अपि पादाभ्याम् एव विद्यालयम् गच्छामि। परन्तु अहम् सहोदरः यानेन एव विद्यालयम् गच्छामि। भो श्याम! त्वम् कदा विद्यालयम् गच्छसि?

श्यामः — मित्र! अहम् प्रातः विद्यालयं गच्छामि। मध्याह्ने यदा क्षुधार्तः भवति तदा अहम् गृहम् प्रति आगच्छामि। अपरान्ने अहम् पठनाय विद्यालयम् एव गच्छामि। (यदृच्छतः तावत्तः कदाचित् अपि आगच्छति)।

रामः श्यामः च — हे बालाः! यूयम् विद्यालयम् कुत्र गच्छथ?

बालाः — भो बालाः! वयम् अपि विद्यालयं न गच्छामः। अस्माकम् विद्यालयः अपि अवकाशः अस्ति। वयम् तु क्रीडनाय क्रीडाक्षेत्रम् गच्छामः।

※ P.T.O.

अभ्यास

१. वर्णोच्चारणम्:-

कुत्र - कहाँ	कदा - कब
यत्र - जहाँ	यदा - जब
तत्र - वहाँ	तदा - तब
कथं कैसे	अपरान्ने - अपराह्न
यथा जैसे	अपि - भी
तथा वैसे	अस्माकम् - हमारा
	मध्याह्न - दोपहर

२. लकाराणां प्रयोगः

हे राम! हे रामौ! हे रामाः!
भो बाल! भो बालौ! भो बालाः!

३. प्रश्नवाचकशब्दानां प्रयोगः:- (क) नाट्यांशे अधोरेखाङ्कितानां प्रश्नवाचकशब्दानां प्रयोगः कृतः:- अपि, कथम्, तदा, यथा, कुत्र, अपरान्ने।

(ख) अधोलिखितानां प्रश्नानां उत्तराणि लिखत:- जब शीतकाल आता है तो जल ठंडा हो जाता है। आज आकाश में बादल हैं। दुःख के बाद सुख आता है। जब राम पढ़ता है तो श्याम लिखता है।

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

यस्मात् च मेघ च यथा च यत्र च
यावत् च यत्र च शुभाशुभम् प्रायशः ।
तस्मात् च तेन च तथा च तदा च मत्र च
तावत् च तत्र च विधातृवशाद् उपैति ॥

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

अभ्यास: पाठ:

लोट् लकार

राम: पाठम् पठतु ।
सा पत्रम् लिखतु
माहन: शाकम् च ग्रामम् गच्छतु ।
ते पाठम् पठन्तु पत्रे च लिखताम् ।
गुरवः भारतम् रक्षन्तु वृक्षान् च जलम् पिबन्तु)
ताः विद्यालयम् गच्छन्तु पाठम् च स्मरन्तु ।
सत्यम् वद, धर्मम् चर । पाठम् स्मर ।
युवाम् गृहम् गच्छतम् जनकम् च नमतम् ।
यूयम् शत्रु न्यायालयम् उपदेशम् च शृणुत ।
हे चोराः ! यूयम् पराधनम् न हरत ।
हे शिष्याः ! यूयम् कदा अपि असत्यम् न वदत ।
किम् अहम् अद्य गृहम् गच्छानि ? पाठम् वा पठानि ?
गुरुवर ! किम् अहम् शान्तः ~~भवानि~~ ?
किम् अद्य भोजनम् रक्षाव ?
किम् वयम् अद्य चित्रम् पश्याम ?
लोकाः सुखेन वसन्तु सदा एव च पश्यन्तु ।
दशरथ नगरस्थाः जनाः भवन्तु ।
यूयम् पुराणम् गर्वम् न जिघृत ।

अभ्यास

१. शब्दरूप: — कदा कभी (हृ) हृ — चुराना
असत्यम् झूठ (या) जि — जीतना
अन्तः अन्दर वा — या
सदा हमेशा

२. लकार के रूप: —

पठतु	पठताम्	पठन्तु
पठ	पठतम्	पठत
पठानि	पठाव	पठाम

३. घर का काम: — (कि, अनुवाद कीजिए :- १. बालकाः ! अद्य विद्यालयं गच्छत । २. तोता के लिए जल दो । ३. बन्दर बूढ़ा घर बड़ा अच्छा रखो । ४. शेर वन में गर्जे और मोर नाचे । ५. क्या हम आज बाजार जा सकते हैं ? ६. दादा जी को नमस्कार करें ।

(ख) ~~निम्नलिखित का शब्द रूप कीजिए~~ :-
१- किम् अहम् पठम् पठानि ?
२ युवाम् गृहम् गच्छतम् ३ वयम् असत्यम् न वदताम् ।

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

पुनर्दश: पाठ:

कन्या

(अकारान्त स्त्रीलिङ्ग)

तथा: जूहत पाठशालायां: द्वे न प्राप्ति ।

कन्या इत: । एका कमला प्राप्ति द्वितीया विमला । अस्मिन् प्रतिदिनम् कन्याभि: सह पाठशालायाम् गच्छत: । तत्र पाठशालायाम् कन्या: वृक्षाणाम् छायायां निजपाठान् स्मरन्ति । तस्याम् कमला विमला च क्रीडास्थले क्रीडाय क्रीडाक्षेत्रम् गच्छत: । तत्र खेलत: यावत: च । तथा एकस्मिन् सरसि वर्तन्ते । तत्र बालिका: शीतले छायायां कन्यानाम् क्रीडाम् पश्यन्ति । क्रीडया तासाम् आनन्दम् सरसम् च भवति ।

रविवारे बालिका: उद्यानम् गच्छन्ति । अस्मिन् कन्या अपि तासु: तत्र गच्छत: । विमला मालाम् करोति, कमला पुष्पाणि जिघ्रति । उद्याने एका कूपिका अपि प्राप्ति । कूपिकायां: जलम् शीतलम् मधुरम् च प्राप्ति । कन्या: जलम् पानाय न विश्रान्ति । ता: लताभि: भ्रमरान् पश्यन्ति । यदा शुष्काणि पत्राणि सरितायाम् पतन्ति तदा ता: प्रसीदन्ति । हे कमले ! त्वम् जलम् न पिबसि । हे बालिका: ! यूयम् पुष्पाणि न च स्पृशत ।

अभ्यास

१. पर्यायशब्द :- उद्यान - बाग़ प्रसिद्ध - प्रसन्न होना

अस्मि - मैं हूँ स्पृश - छूना

कूपिका - नदी नहर प्र√क्षिप् - फेंकना

भ्रमर - भौंरा उद्यान - बाग़

२. लकारों के नाम :- लता (आकारान्त स्त्रीलिङ्ग) के सब व्याकरण पाठावली में दीजिये ।

३. घर का काम :- (क) वाक्यों में क्रियाओं को जोड़िये :-

उद्यानम् लताभि, पाठशालाम्, कन्याभि:, उद्यानम्

(ख) अनुवाद कीजिये :- १. उद्यान में कमला क्रीडा में मग्न है ।

२. बालक वृक्षों की छाया में विद्या को पढ़ते हैं ।

३. उद्यान में कमला और मीरा भ्रमण करते हैं । ४. राम सीता के लिये पुष्प को लाता है । ५. सब कन्याएँ पाठशाला को जाओ, पढ़ो, पढ़ने को पढ़ो ।

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

दिवाऽऽणा

निशायाम् दीपकाः तारकाः इव दीव्यन्ति । ईश्वरः कृपया दुःखानि क्षपयन्ति चित्तम् च शमयति । वर्षासु वने मयूराः नृत्यन्ति । ग्रीष्मे सायंकाले जलम् शुष्यति । जनकः पुत्रेभ्यः रुष्यति । भागिकाः चौरेभ्यः त्रस्यन्ति, सज्जनाः दुर्जनेभ्यः बिभ्यन्ति । कन्ये वस्त्राणि सीव्यतः । जलैः गात्राणि शुद्ध्यन्ति, मनः सत्येन शुद्ध्यति । नृपाः दुष्टान् न क्षमन्ते । मूर्खम् कार्यकालं न मुह्यत । (N. Para.) गृहाणाम् वस्त्रैः शोभाम् च पश्याम । दीपाम् शर्मः कामः तुष्यति । वयम् न कदापि युध्यामः । हे पुत्र ! त्वम् न कदापि लुभ्य, लोभः दुःखस्य कारणम् भवति । किम् मूढम् पापात् क्षाम्यति ? हे राम ! प्रजाभ्यः दुःखानि नश्यन्त, प्रजाः च तुष्यन्ति । किम् पुत्राम् सीतायाः तेऽ भ्रातृभ्यः ?

१. धातवः :-

दिव् (दीव्)	- चमकना	नृत्	- डरना
नश्	- नष्ट होना	सिव् (सीव्)	- सीना
शम् (शाम्)	शान्त होना	क्षम् (क्षाम्)	- क्षमा करना
युध्	- लड़ना	तुष्	- प्रसन्न होना
		लुभ्	- लालच करना

२. लकारों के रूप :-

दीव्यति		दीव्यतः	दीव्यन्ति
दीव्यसि		दीव्यथः	दीव्यथ
दीव्यामि		दीव्यावः	दीव्यामः

३. घर का काम :-

(क). रिक्त स्थानों की पूर्ति करो :-

१. निशायाम् तारकाणि ---- . २. सज्जनाः दुर्जनेभ्यः ---- . पिता ---- नृत्यति । ४. मनः ---- शुद्ध्यति । ५. नृपाः ---- न क्षाम्यन्ति ।

(ख) अनुवाद कीजिये :-

१. तुम सदा कहां घूमते हो ? २. मैं उद्यान की शोभा को देख कर प्रसन्न होता हूं । ३. तू हरदीन झगड़ा नहीं सीता । ४. हे भ्राता(ओ) लड़ना घर का धन न करो । ५. तारे रात को चमकते हैं, प्रातः काल नष्ट हो जाते हैं ।

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

दिवाऽऽणा

निशायाम् अपाकारो तारकाः दीव्यन्ति । ईश्वरेच्छया कृषकाः दुःखानि नश्यन्ति सुखम् च शाम्यति । वर्षासु वने मयूराः नृत्यन्ति । ग्रीष्मो सर्वप्राणिभ्यः जलम् शोषयति । जनकः पुत्रेभ्यः कुप्यति । भागिकाः चौरेभ्यः त्रस्यन्ति, सज्जनाः दुर्जनेभ्यः बिभ्यन्ति । कन्ये वस्त्राणि सीव्यतः । जनाः गाङ्गाणि शुद्ध्यन्ति, सत्येन शुध्यति । मूर्खाः दुष्टान् न क्षाम्यन्ति, (N. Para.) मूर्खम् कार्यकर्ता न मुह्यति । अपराधिनम्, क्षमस्व मामपि वत्स शोकाम् च परिहर । अपराधम् क्षमेः कार्यः तत्पर । वयम् न कदापि युध्यामः । हे पुत्र ! त्वम् न कदापि लुभ्य, लोभः दुःखस्य कारणम् अस्ति । किम् अहम् पापात् क्षाम्यामि ? हे राम ! प्रजासु दुःखानि नश्यन्तु, प्रजाः च तप्यन्तु । किम् पुत्राः मातुः तप्यन्ति ?

१. धातु रूप :-

दिव् (दीव्) - चमकना	तप् - तपना	कृष् - करना
नश् - नष्ट होना	शो (शोष्) - शोषण करना	सिव (सीव्) - सीना
शम् (शाम्) शान्त होना	कुप् - क्रोध करना	क्षम् (क्षाम्) - क्षमा करना
शुध् शुद्ध करना		लुभ् - लोभ करना

२. लकार के लिये :-

दीव्यति	दीव्यतः	दीव्यन्ति
दीव्यसि	दीव्यथः	दीव्यथ
दीव्यामि	दीव्यावः	दीव्यामः

३. घर का काम :-

(क). रिक्त स्थानों की पूर्ति करो :-

१. निशायाम् तारकाणां ---- . २. सज्जनाः दुर्जनेभ्यः ---- . पिता ---- तुष्यति । ४. मनः ---- शुध्यति । ५. नृपाः ---- न क्षाम्यन्ति ।

(ख) अनुवाद कीजिये :-

१. तुम सदा कहां घूमते हो ? २. मैं उद्यान की शोभा को देख कर प्रसन्न होता हूं । ३. तू हरीश प्रसन्न नहीं होती । ४. हे भ्रातः निर्धनों पर क्रोध न करो । ५. तीर सत को चमकते हैं, प्रातः काल नष्ट हो जाते हैं ।

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

। जन्माष्टमी का महत्व ।

([redacted])

जन्म ले लेने मात्र से कोई मनुष्य महापुरुष नहीं बन सकता, और किसी भी मनुष्य के साधारण कृत्यों के प्रचार पर उस का जन्मोत्सव नहीं मनाया जाता। किसी भी पुरुष के अलौकिक तथा असाधारण कार्य कलापों से प्रभावित हो कर ही जनता उस को महापुरुष की उपाधि देती है तथा उस के इन महान् कार्यों की स्मृति को स्थायी बनाये रखने के लिये जन्मोत्सवादि अनेक पर्वों को मनाया करती है। भगवान् कृष्ण ने गीता का गुह्यतम तथा अपार उपदेश दे कर हिन्दू जाति का उपकार किया है। उन्हों ने हमारी संस्कृति तथा सभ्यता को संगठित किया है। यह उन का महान् दान है, जिस के कारण से हिन्दू जाति कभी मुक्त नहीं हो सकती। यही कारण है कि समस्त महापुरुषों में उन को सर्वोच्च स्थान प्राप्त हुआ है और उन की स्मृति में हुआ जन्माष्टमी नाम का पर्व मनाया है।

हमारे सम्मुख भगवान् कृष्ण के दो रूप हैं। एक रूप तो वह है जो कि हिन्दू के बालकालीन तथा रासकालीन कार्यों ने हमारे सामने रखा है। इन कार्यों ने कृष्ण के पूर्ण तथा सर्वांगपूर्ण रूप को दृष्टि में अपनी व्यक्तताओं तथा कृतियों में छिपा दिया है। बालकों का घुटनों के बल चलना, मक्खन चोरी करना, मुंह पर दही को लपेट कर लेना, शैतान को चूल्हे में डाल देना आदि उन की बाल्य कालीन की क्रीड़ायें सूरदास आदि कवियों का बहुत भाई है। पुनः जब वह कुछ बड़े हो तो जौ चराना, बंसी बजाना, गोप बालकों के साथ खेलना, मक्खन चुराना, यमुना में स्नान करती हुई गोपियों के कपड़े चुरा कर कदम्ब के वृक्ष पर चढ़ कर पहने हुए गोपियों को खिजाना आदि कार्यों ने बड़ सुन्दर छटा से लिखा है। युवावस्था में गोपियों के साथ प्रेम, राधा के साथ क्रीड़ा, गोपियों तथा ब्रह्मवालाओं और यशोदा आदि को अपार वर्णन मिलता है। गोपियों आदि के प्रेम के वशीभूत हो कर राधा को अन्तर्धान कर जाना आदि कार्यों ने सूरदास तथा अन्य कवियों ने राधा तथा कृष्ण के प्रेम को अपना कर अपना महत्व रसिक कवियों का रसाना में हुआ कृष्ण के इस रूप का प्रचार सर्वत्र हुआ। गोपियों के अनुकूल और रूप को

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

लङ् लकार

राम: वनम् अगच्छत्

राम: लक्ष्मण: च वनम् अगच्छताम् ।

सीता राम: लक्ष्मण: च वनम् अगच्छन् ।

रावण: लङ्कायाम् अवसत् मारीच: अपि तत्र अवसत् ।

ता वनम् अपश्यताम् । सीता कुटीरं अपाठीत् ।

राम: लक्ष्मण: च कुटीरे न अपाठताम् । रावण:

सीताम् अहरत् । राम: अपि अमुह्यत् लक्ष्मण:

अपि अमुह्यत् । वनस्य जीवा: खगा: च व्याकुला:

अभवन् । सञ्जीवस्य अमात्य: सीतायाः अन्वेषणाय

सैन्यम् अवसत् । स: अशोकवाटिकायाम् सीताम्

अपश्यत् । सीता तम् यदा अपश्यत् तदा सा

अत्रसत् । स: सीतायै रामस्य ~~अङ्गुलीयकम्~~

अङ्गुलीयकम् अयच्छत् । सीतायाः मनः अनन्दयत् ।

पवनसुत: लङ्कां अदहत् । उद्यानम् च अनाशयत् ।

रावण: पवनसुताय अक्रुध्यत् ।

किम् त्वम् रामस्य कथाम् अपठ: ? अहम्

तु रामस्य कथाम् अपठम् । वयम् तु रामलीलाम्

अपश्याम । युवाम् रामस्य चित्रम् अपातयतम्

आवाम् च अभोजयाम अपठाव ।

अभ्यास

१. नये शब्द :- कुटीर - कुटिया (दा) यच्छ - दे ना

अङ्गुलीयक - अंगूठी (तृ) तर - तैरना

पवनसुत: - हनुमान

२. समझने के लिये :- अगच्छत् अगच्छताम् अगच्छन्

अगच्छ: अगच्छतम् अगच्छत

अगच्छम् अगच्छाव अगच्छाम

३. घर का काम :- (क) रिक्त स्थानों की पूर्ति करो :-

१. सीता लक्ष्मण: च रामेण ---- वनम् ---- । २. लङ्कायाम्

रावण: ---- । ३. रावण: सीताम् ---- । किम् ---- पाठम्

अपठ: । वृद्धात् ---- अपठत् ।

(ख) हम दोनों ने पाठ पढ़ा । गोपाल ने खाना खाया और पानी

पिया । कन्याएं खेत के मैदान में खेलीं । हम ने रात को

आकाश में तारों को देखा । क्या तुम ने रामायण को पढ़ा

है । राम एक धर्मशील राजा था ।

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

देश यह है कि मेरे मानव जाति को निष्क्रियता को कदापि से निकाल कर कर्म मार्ग का उपदेश देते हैं। मनुष्य को परिणाम की चिन्ता न करते हुये निरन्तर कर्तव्य पालन करते जाना चाहिये। गीता अध्याय 2 में स्पष्ट लिखा है :

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥

किसी भी निष्क्रिय जाति के पुनरुत्थान के लिये यह उपदेश एक जादू की शक्ति रखता है। परन्तु बड़े खेद की बात है, कि भगवान कृष्ण का इतना महान् संदेश हमारे पास होते हुये भी हम पतनोन्मुख के गर्त में पड़े हुये हैं। हम भाग्यवादी बन गये हैं। हम पर हमेशा दीन हीन और कंगाल बने रहने की धुन सवार हो गई है। हम ने भगवान कृष्ण के महान उपदेश को भुला दिया है। हम ने उन के जीवन से शिक्षा ग्रहण न की। हम उन के बाल्यकाल तथा कैशोरावस्था की तरफ ध्यान न दे सके। कृष्ण के नाम को धन दौलत कमाने पर खर्च करते हैं तथा गीता को माता का स्थान देते हुये भी हम उन के उपदेश नहीं सुनते। कोरी उपासना तथा कोरे गान भजन से कुछ भी नहीं बन सकता। हमारा कल्याण तो तभी हो सकता है, जब कि हम गीता के उपदेश को अपनाकर तथा अपने कर्तव्य को निष्काम भावना से पालन करते हुये अपना आत्मा देश तथा जाति का कल्याण करें।

जन्माष्टमी प्रतिवर्ष हमारे लिये यही संदेश ले कर आती है कि हम भगवान कृष्ण के बताये हुये उस मार्ग पर चलें। गीता का उपदेश उन्हों ने मोहग्रस्त तथा निष्क्रिय अर्जुन को अपने कर्तव्य के प्रति जाग्रत करने के लिये कुरुक्षेत्र के रणभूमि में दिया था। एक दिन उपवास कर लेने, कीर्तन में सम्मिलित होने, तथा मन्दिर में जा कर भगवान कृष्ण की मूर्ति के दर्शन मात्र कर लेने से कल्याण की संभावना नहीं। कल्याण तो तभी होगा जब कि हम उन के बताये हुये मार्ग पर चल कर अपना, देश तथा जाति की उन्नति करेंगे। कृष्ण जन्माष्टमी भगवान का यही संदेश ले कर आती है। देश के सामने बड़ी बड़ी जटिल समस्यायें हैं। हमें उन का समाधान करना है। अपने देश को उन्नत देशों के स्तर पर ला कर खड़ा करना है। दरिद्रता तथा बेकारी को दूर करना है। गुलामी से स्वतन्त्रता की रक्षा के लिये अपने को दृढ़ तथा शक्तिशाली बनाना है। यह तब कुछ तभी हो सकता है जब कि हम सब अपने अपने कर्तव्य का पालन गीता के उपदेशानुसार निष्काम भाव से करें। तभी हम वास्तविक अर्थों में कृष्ण के भक्त कहला सकते हैं तथा गीता जैसे महान ग्रन्थ पर गर्व कर सकते हैं।

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

(इकारान्त पुल्लिङ्ग , तुदादिगण)

हरि: गच्छति । हरी गच्छत: । हरय: गच्छन्ति ।

ऋषय: मुनय: यतय: च वसन्ति । द्वौ ऋषी ... , तत्र एक: ऋषि: गच्छति । ऋषी द्वौ कपी वसत: । तौ मुनी न तुदत: । वृक्षयो: पक्षिणो: सन्ति । पक्षिभ्य: फलानि रोचन्ते । यदा ऋषय: ... इच्छन्ति तदा काय: ... क्षिपति । मुनय: पाणिभ्याम् ... यच्छन्ति । शिष्यो: जलं पादयो: ... सिञ्चन्ति । गोभ्यो घासं ... यच्छन्ति । तत्र नृपतय: धीमन्त: ... यदा ... शान्तं मनो ... तदा शिष्या: ... । हरि: संसारं सृजति । यूयं हरिं भजत । एको गृहीतं ... । ... जीवान् न तुदत । ... हरे: भक्तानां ... ।

अत्र ... कदापि क्रोध: न भवति । ऋषय: ... । मुनीनां ... शुचि: ... । भूपतीनां ... तथा ... न भवति यथा ... । ते ... इव ... संसारं च ... च हरन्ति । ... ।

अभ्यास

१. नपुंसकशब्द :— हृद: — कमल (पुंल्लिङ्ग हृद) तुद् — तंग करना
अक्षि — आंख (इष्) इच्छ — चाहना
गिरि — पर्वत (शिक्ष) शिक्षा — सीखना
कपि — बन्दर सिच् — सींचना
धेनु — गौ सृज् — उत्पन्न करना
अरि — शत्रु क्षिप् — फेंकना
कवि: — कछुआ (प्रच्छ) पृच्छ — पूछना
मक्षिका — मक्खी (विद्) विद् — जानना
अग्नि — आग

तुदति तुदत: तुदन्ति
तुदसि तुदथ: तुदथ
तुदामि तुदाव: तुदाम:

२. (क) ... के लिये :— (ख) हरि शब्द के रूप व्याकरण पुस्तक से देखिये

३. (क) ... का काम :—
शब्दों को प्रयोग वाक्यों में कीजिये :—
पाणिभ्याम् , अक्षय: , गिरय: , मुनीनाम् , हरये ।

(ख) अनुवाद कीजिये :—
१. मेरे पुत्र पेड़ों पर चढ़ते हैं और फल खाते हैं । २. बन्दर पर्वतों पर पेड़ों को खाते हैं और फेंकते हैं । ३. क्या तुम (उच्च) में पाणि हो ? ४. मेरा मित्र तलाब (पुंल्लिङ्ग) में शत्रुओं को जीतते हैं । ५. क्या हम ... वृक्षों को जल दें ?

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

सकते हैं। गीता को ग्रन्थकर्ता ने जन साधारण, विशेषकर युद्ध
लोग कथा के इस रूप में ही श्रद्धा तथा आदर देते हैं और
इसी को कल्याणकर समझते हैं।

भगवान् कृष्ण का दूसरा रूप वह है जो महाभारत का,
सर्वमान्य भगवान् वेद व्यास ने और सामने रखा है। यहां
कृष्ण एक सच्चे योगी, राजनीतिज्ञ तथा धार्मिक नेता के रूप
में हमारे सामने आते हैं। वह सत्य तथा धर्म की पक्ष लेकर दुष्ट-
पाल, जरासंध तथा कंसादि दुराचारी तथा पापी शासकों का
संहार करते हैं। और जब धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र का युद्ध सामने आ,
मोह ग्रस्त हो कर युद्ध करने से इनकार कर देते हैं, तथा गांडीव
छोड़ कर रथ से नीचे उतर जाते हैं तो भगवान् कृष्ण उन्हें कर्म
योग की सच्ची तथा कल्याणकारी उपदेश दे कर उनके मोह
को दूर करते हैं और उन को युद्ध के लिये तय्यार करते हैं। यहां
कृष्ण एक सच्चे राजनीतिज्ञ के रूप में प्रकट होते हैं।

भगवान् कृष्ण के इन दोनों रूपों में आकाश पाताल
का अन्तर है। कहां योगीराज कृष्ण और कहां गोपकन्याओं
के चीर चुराने वाला ग्वाला। इस महान् अन्तर का उत्तरदायित्व
हिन्दू के कवियों तथा अन्य विद्वानों पर है, जो भगवान् कृष्ण
को योगीराज के पद से खींच कर एक लुटेरा तथा कामुक ग्वाले
के स्थान पर ले आये हैं। भगवान् कृष्ण का वह जो सत्य रूप में
दरसते हैं, वह वस्तुतः एक उत्कृष्ट रूप है। जन साधारण तथा समाज
की दृष्टि से यह रूप कल्याणकारी है। एक साधारण व्यक्ति तो
यह समझने में भी असमर्थ है, कि कृष्ण तथा गोपियों का क्या
संबंध था। शायद शेक्स तथा कोई लोग ही इस बात को समझते
होंगे।

भगवान् कृष्ण का दूसरा रूप ही यथोत्कृष्ट तथा भगवत्-
कोटि है। गीता का ग्रन्थकर्ता भगवान् कृष्ण के इसी रूप को
उपस्थित करता है। गीता उपनिषदों का एक काव्य है। इस महान्
ग्रन्थ का सम्मान केवल भारत प्रेमियों ने ही नहीं अपितु विश्व
के सभी देशों तथा जातियों ने किया है। यही कारण है कि,
गीता का अनुवाद संसार भर की सभी सभ्य तथा उन्नत भाषा-
ओं में हो चुका है। कितने ही पाश्चात्य जाति का अध्ययन क
रने में अपना कर उन्नति के शिखर पर बिठा देने के लिये श्री कृष्ण गीता
के उपदेश ही, पर्याप्त समझे हैं। गीता का सब से उत्तम

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

अभ्यासः पाठः

(पुराणं जगा, रुदा, अत)

चोराः नगरम् चोरयन्ति। नृपतयः चोरान् दण्डयन्ति वण्डयन्ति च। अतः अहम् कथयामि यत् चोराणाम् राजपुरुषेभ्यः भयम् भवति। हे बालकाः! यूयम् किम् जानाथ? हे अतिथयः यूयम् भोजनम् गृह्णीत। हे मुनयः यूयम् चर्मम् चिन्तयत। हे हरे! त्वम् इदम् किम् अनुभवसि। हे देव! किम् त्वम् कारणम् अरण्यम्। कोपः कोपात् क्रुद्धः अनुभवति अवगच्छति च उत्तरम् रामचरितम्। अहम् वृद्धान् अपूजयम्। युवाम् चर्मम् अपातयतम्। नरपतयः प्रजाः पालयन्ति। त्वम् किम् लोलयसि?

सीता पाठम् पठित्वा पत्रम् लिखति। जानकी भोजनम् गृहीत्वा जलम् अपिबत्। अहम् जित्वा कार्यम् भोजनम् अभक्षयम्। देवदत्तः गृहम् गत्वा पाठम् स्मरति। मूढः कथाम् कथयित्वा दण्डम् यच्छति। मधु नीत्वा केकारवाः कुर्वन्ति। युवाम् स्नात्वा हरिम् अपूजयतम्। वयम् कथाम् श्रुत्वा नृत्यामः। रामः रावणम् जित्वा हत्वा च अयोध्याम् सीतया सह अगच्छत्।

~~प्रेरणा~~ प्रेरणा गुरुः पाठं पठति। ~~बालक भोजनम् खादतम्~~। अनुज्ञा पाठः पठ्यताम्। सीतया पुस्तकम् पठितम्। मया गुरवः अभ्यर्थनाः जाताः। जानकीन किम् श्रुतम्। मया सीतम् श्रुतम्। रावणेन सीता हृता। रामेण हतः। राक्षसाः रणे मृताः। बालकैः भोजनम् खादितम् जलम् च पीतम्। हरेः कृपया राजानः नद्याः पुत्राः च नद्यः। ~~गच्छन्ता~~ श्रुत्वा स्नात्वा जलानि अभक्षयन्।

अभ्यास

२. नये शब्दाः — राजपुरुषः - सिपाही
केकारवः - मोर का शब्द
(पुरा) चोर् - पुराना
कथ् - कहना
रक्ष् - रखना
चिन्त् - चिन्तन करना

३. समानं रूपं लिखत — चोरयति, चोरयतः, चोरयन्ति
चोरयसि, चोरयथः, चोरयथ
चोरयामि, चोरयावः, चोरयामः

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

गम्	गत्वा	गतः
पठ्	पठित्वा	पठितः
चल्	चलित्वा	चलितः
नृत्	नर्तित्वा	नर्तितः
चर्	आचरित्वा	आचरितः

(ग) चर का काम :—

(क) शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिये :—

पठित्वा, गमितम्, रक्षितम्, स्नात्वा, कथयति, आचरति

(ख) अनुवाद कीजिये :—

१. पंचक बालकों को गिनता है। २. कूपक हल चलाते हैं और गोजन रखा कर ठंडा पानी पीते हैं।
३. घोड़े घास को खा कर प्रसन्न होते हैं।
४. तिन पक्षियों के चोरों को पीटा और उन्हें दण्ड दिया।
५. अश्वक लोग (सवार) को चलने में सहायता देते हैं।
६. थके हुये मजदूर दूसरों की सहायता से घर गये।

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

एकादशः

संख्या

2- एकः देवः सर्वभूतेषु गूढः।
2- द्वौ पक्षौ मासस्य भवतः। कृष्णपक्षः च शुक्लपक्षः च।
3- त्रयः लोकाः भवन्ति। पृथिवी लोकः पाताललोकः स्वर्गलोकः च।
4- चत्वारः वेदाः सन्ति। ऋग्वेदः, यजुर्वेदः, सामवेदः, अथर्ववेदः च।
5- पञ्च यज्ञाः गृहस्थस्य भवन्ति। ब्रह्मयज्ञः, देवयज्ञः, पितृयज्ञः, भूतयज्ञः, आतिथ्ययज्ञः च।
6- षड् ऋतवः भारते वर्षे भवन्ति। ग्रीष्मः, वर्षाः, शरत्, हेमन्तः, शिशिरः, वसन्तः च।
7- सप्त काण्डानि रामायणस्य सन्ति, बालकाण्डम्, अयोध्याकाण्डम्, अरण्यकाण्डम्, किष्किन्धाकाण्डम्, सुन्दरकाण्डम्, युद्धकाण्डम्, उत्तरकाण्डं च।
8- अष्ट अष्टाध्यायीनामव्याकरणग्रन्थस्य अध्यायाः सन्ति
9- नव रत्नानि सन्ति।

10- दश अवतराः विष्णोः भवन्ति -

मत्स्यः कूर्मो वराहश्च नरसिंहोऽथ वामनः।
रामो रामश्च कृष्णश्च बुद्धः कल्की च ते दश॥

11- एकादश प्रसिद्धाः उपनिषदः सन्ति। ईश-केन-कठ-प्रश्न-मुण्डक-माण्डूक्य-तैत्तिरीय-ऐतरेय-छान्दोग्य-बृहदारण्यक-श्वेताश्वतराः इति।

12- द्वादश संवत्सरस्य मासाः भवन्ति - पौषः, माघः, फाल्गुनः च।
चैत्रः, वैशाखः, ज्यैष्ठः, आषाढः, श्रावणः, भाद्रपदः, आश्विनः, कार्तिकः, मार्गशीर्षः,

13 त्रयोदश - त्रयश्च दश च त्रयोदश भवन्ति।

14 चतुर्दश विद्याः भवन्ति। षट् वेदाङ्गानि, चत्वारः वेदाः, मीमांसा-न्यायदर्शनम्, वैशेषिकदर्शनम्, पुराणम्, धर्मशास्त्रम् च।

15 पञ्चदश

16 षोडश

17 सप्तदश

18 अष्टादश

19 नवदश, एकोनविंशतिः, एकान्नविंशति

20 विंशतिः

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

	ल्वा - त्वा	क्त - त
गम्	गत्वा	गतः
पठ्	पठित्वा	पठितः
खन्	खात्वा	खातः
नृत्	नर्तित्वा	नर्तितः
कर्	सञ्चारयित्वा	सञ्चारितः

(ङ) पद का काम :—

(क) शब्दों के वाक्यों में प्रयोग की शिक्षा :—

पठित्वा, गमितम्, रक्षितम्, हत्वा, कथयित्वा, सञ्चारयति

(ख) मुखवाद कीजिये :—

१. पैर चोपक बालकों को गिनती ५ । २. कूदकर हत्या चलाते ५ और गणना करा कर ठीक पाने पीते ५ ।
३. घोड़े चाल को रखा कर प्रदर्शन १ १ ५ ।
४. पाँच पहियों के चारों को पीटा और ३ ५ दर्शाया ।
५. सञ्चार कार्य, व्यापार को चलन गति ५ ।
६. चले हुये गड़हर वृक्षों की छाया में विश्राम करते ५ ।

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

संख्या

2 - एक: देव: सर्वभूतेषु गूढ:।

2 - द्वौ पक्षौ मासस्य भवत:। कृष्ण पक्ष: च शुक्ल पक्ष: च।

3 - त्रय: लोका: भवन्ति। पृथिवी लोक: पाताललोक: स्वर्गलोक: च।

4 - चत्वार: वेदा: सन्ति। ऋग्वेद:, यजुर्वेद:, सामवेद: अथर्ववेद: च।

5 - पञ्च यज्ञा: गृहस्थस्य भवन्ति। ब्रह्मयज्ञ:, देवयज्ञ:, पितृयज्ञ:, भूतयज्ञ:, आतिथ्ययज्ञ: च।

6 - षड् ऋतव: भारते वर्षे भवन्ति। ग्रीष्म:, वर्षा:, शरत्, हेमन्त:, शिशिर:, वसन्त: च।

7 - सप्त काण्डानि रामायणस्य सन्ति, बालकाण्डम् अयोध्याकाण्डम्, अरण्यकाण्डम् किष्किन्धाकाण्डम् सुन्दरकाण्डम् युद्ध-काण्डम्, उत्तरकाण्डं च।

8 - अष्ट अष्टाध्यायीनामव्याकरणग्रन्थस्य अध्याया: सन्ति

9 - नव रत्नानि सन्ति।

10 - दश अवतारा: विष्णो: भवन्ति :—

मत्स्य: कूर्मो वराहश्च नरसिंहोऽथ वामन:।
रामो रामश्च कृष्णश्च बुद्ध: कल्की च ते दश॥

11 - एकादश प्रसिद्धा: उपनिषद: सन्ति। ईश-केन-कठ-प्रश्न-मुण्डक-माण्डूक्य-तैत्तिरीय-ऐतरेय-छान्दोग्य-बृहदारण्यक-श्वेताश्वतरा: इति।

12 - द्वादश संवत्सरस्य मासा: भवन्ति — पौष:, माघ:, फाल्गुन: च।

13 त्रयोदश — त्रयश्च दश च त्रयोदश भवन्ति।

14 चतुर्दश विद्या: भवन्ति। षट् वेदाङ्गानि, चत्वार: वेदा:, मीमांसा-दर्शनम्, न्यायदर्शनम्, पुराणम्, धर्मशास्त्रम् च।

15 पञ्चदश

16 षोडश

17 सप्तदश

18 अष्टादश

19 नवदश, ऊनविंशति:, एकोनविंशति

20 विंशति:

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

३.४२ पाठ

प्रश्नों के उत्तर :— (क) कौन-कौन से संस्कार किए जाते हैं ?

(ख) मुण्डन संस्कार का वर्णन कीजिए :—

१. कर्ण छेदन क्यों किया जाता है ?

२. यज्ञोपवीत संस्कार किस आयु में किया जाता है ?

३. वेदारंभ संस्कार का क्या महत्व है ?

४. समावर्तन संस्कार का वर्णन करो।

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

(लृट् लकार, उकारान्त पुंल्लिङ्ग)

साधवः परोपकाराय सदा श्रमम् करिष्यन्ति। गुरवः धर्मम् वादिष्यन्ति। शिष्याः तरूणाम् छायाम् पाठम् पठिष्यन्ति। शिशू क्रीडार्थम् क्रीडतः। शर्मणां कृपया प्रजाः सुखेन वर्तिष्यन्ते। अहम् पितरौ न त्यक्ष्यामि। जामातरः श्वशुरान् सेविष्यन्ते। वायवः वेगेन वृक्षाणाम् पत्राणि फलानि च पातयिष्यन्ति। प्रभो! वयम् शत्रून् कदा जेष्यामः? साधूनाम् रक्षार्थं पापानाम् च विनाशाय कृष्णः अवतरिष्यति।

पक्षे पक्षिणः मधुराः शब्दान् करिष्यन्ति। मन्दम् वाति वायुः। तरवतः जलस्य बिन्दवः पतिष्यन्ति। भारते वर्षे बहु शीतम् भविष्यति। पक्षिणाम् शीतेन शब्देन वर्षाभविष्यति। ग्रीष्मे भानोः किरणैः सरोवराणाम् जलम् शोषयिष्यति। वर्षासु पक्षिणः मधुराः गानम् करिष्यन्ति, मयूराः नर्तिष्यन्ति, जलबिन्दवः च पातयिष्यन्ति। शरत्काले कमलानि तडागेषु विकासयिष्यन्ति। हेमन्ते शालयः भविष्यन्ति। शिशिरे भानोः पक्षिणः कोलाहलः भविष्यति। वसन्ते द्रुमाः सुखदाः वायवः सुगन्धयः दिवसाः च रम्याः भविष्यन्ति। ग्रीष्मे सर्वे पाठशालां गमिष्यामि। वयम् तत्र एव स्थास्यामः। गुरुः उपदेशम् दास्यति। वयम् धर्मम् ज्ञास्यामः। यूयम् जलम् पास्यथ।

पक्षिणः

१- नये शब्द :- तरु - वृक्ष, वा - चलना (हवा का)
शिशु - बच्चा, गा - जाना
पताक - झण्डा, पा - पीना
जामातृ - दामाद, स्था - ठहरना
कुबेर - कुबेर

२. संस्कृत के वाक्य :- वाक्य में प्रयुक्त लृट् लकार के रूपों के नीचे रेखा खींचिये।

३. घर का काम :- (क). पहले के उत्तर दीजिये :-

१. साधवः परोपकाराय किम् करिष्यन्ति?

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

2. कृष्ण: कंस सम्मोहयति ?
3. गोपाल: कीदृशं संगीतं शृणोति ?
4. मधुरा: कथं गच्छन्ति ?
5. किमर्थं यूयं तत्र गच्छथ ?

(ख) संस्कृत में अनुवाद करो :-

1. मैं प्रातः ही घर जाकर पुस्तक को पढ़ूंगा।
2. ईश्वर की कृपा से प्रजायें सुख से रहेंगी।
3. तुम दोनों घर कब जाओगे ?
4. क्या बालक वृक्षों की छाया में खेलेंगे ?
5. प्रातः उद्यानों में बालक घूमेंगे।
6. देश के योद्धा शत्रुओं को मारेंगे।
7. मैं वेदों को पढ़कर पण्डित बनूंगा।

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

एकविंश पाठः

पद्यानि

वेदः रामायणं चैव पुराणं भारतं तथा ।
आदौ मध्ये तथा चान्ते हरिः सर्वत्र गीयते ॥ १ ॥

सर्ववेदमयी गौः सर्वधर्ममयो मनुः ।
सर्वतीर्थमयी गङ्गा सर्वदेवमयो हरिः ॥ २ ॥

सर्वं परवशं दुःखं सर्वमात्मवशं सुखम् ।
एतद् विद्यात् समासेन लक्षणं सुखदुःखयोः ॥ ३ ॥

तारागणं भूषणं चन्द्रो नारीणां भूषणं पतिः ।
पृथिव्या भूषणं राजा विद्या सर्वस्य भूषणम् ॥ ४ ॥

विद्या मित्रं प्रवासेषु भार्या मित्रं गृहेषु च ।
व्याधितस्यौषधं मित्रं धर्मो मित्रं मृतस्य च ॥ ५ ॥

सर्पः क्रूरः खलः क्रूरः सर्पात् क्रूरतरः खलः ।
मन्त्रौषधिवशः सर्पः खलः केन निवार्यते ॥ ६ ॥

कोकिलानां स्वरो रूपं नारीरूपं पतिव्रतम् ।
विद्या रूपं कुरूपाणां क्षमा रूपं तपस्विनाम् ॥ ७ ॥

~~स जीवति गुणा यस्य धर्मो यस्य च जीवति ।~~
~~गुणधर्मविहीनस्य जीवितं निष्प्रयोजनम् ॥ ८ ॥~~

सुखस्यानन्तरं दुःखं दुःखस्यानन्तरं सुखम् ।
सुखदुःखम् मनुष्याणां चक्रवत् परिवर्तते ॥ ८ ॥

शब्दार्थाः

१. पर्यायशब्दः :- समाप्तिः - समाप्ति
प्रवासेषु - विदेशे में
क्रूरः - कठोर
अनन्तरम् - पश्चात्

२. सन्धयः :- चान्ते = च + अन्ते
व्याधितस्यौषधम् = व्याधितस्य + औषधम्
सुखस्यानन्तरं = सुखस्य + अनन्तरं
दुःखस्यानन्तरं = दुःखस्य + अनन्तरं

३. घर का काम :- (क) — पोंछा तथा बर्तन साफ करना ।
(ख) — झाड़ू तथा चौका साफ करना ।

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

2. कृष्णः कदा सन्यासं अगृह्णात् ?
3. भारतं केन केन नामभिः अभवत् ?
4. मथुरा: कदा नगरी अभवत् ?
5. किं सुमन जनाः पालयन्ति ?

(ख) संस्कृत में अनुवाद करो :-

1. मैं प्रातः ही घर जा कर पुस्तक को पढ़ूंगा।
2. ईश्वर की कृपा से प्रजायें सुख से रहेंगी।
3. तुम दोनों घर कब जाओगे ?
4. हम बालक वृक्षों की छाया में बैठेंगे ?
5. प्रातः प्रकाश में बालक घूमेंगे।
6. हम को लोग शत्रुओं को जीतेंगे।
7. मैं कल को पढ़ कर पण्डित बनूंगा।

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

एकविंश पाठः

पद्यानि

वेद रामायणं चैव पुराणं भारतं तथा।
आदौ मध्ये तथा चान्ते हरिः सर्वत्र गीयते ॥ १ ॥

सर्ववेदमयी गौता सर्वधर्ममयो मनुः।
सर्वतीर्थमयी गङ्गा सर्वदेवमयो हरिः ॥ २ ॥

सर्वं परवशं दुःखं सर्वमात्मवशं सुखम्।
एतद् विद्यात् समासेन लक्षणं सुखदुःखयोः ॥ ३ ॥

तारागणं भूषणं चन्द्रो नारीणां भूषणं पतिः।
पृथिव्या भूषणं राजा विद्या सर्वस्य भूषणम् ॥ ४ ॥

विद्या मित्रं प्रवासेषु भार्या मित्रं गृहेषु च।
व्याधितस्यौषधं मित्रं धर्मो मित्रं मृतस्य च ॥ ५ ॥

सर्पः क्रूरः खलः क्रूरः सर्पात् क्रूरतरः खलः।
मन्त्रौषधिवशः सर्पः खलः केन निवार्यते ॥ ६ ॥

कोकिलानां स्वरो रूपं नारीरूपं पतिव्रतम्।
विद्या रूपं कुरूपाणां क्षमा रूपं तपस्विनाम् ॥ ७ ॥

~~न जीवति जनो यस्य धर्मो यस्य न जीवति।~~
~~धर्मविहीनस्य जीवितं निष्प्रयोजनम्~~ ॥ ८ ॥

सुखस्यानन्तरं दुःखं दुःखस्यानन्तरं सुखम्।
सुखदुःखम् मनुष्याणां चक्रवत् परिवर्तते ॥ ९ ॥

शब्दार्थाः

१. नवीन शब्द :- समासेन - संक्षेपतः
प्रवासेषु - विदेशे में
क्रूर - क्रूर
परान्तरम् - पश्चात्

२. सन्धयः :- चान्ते = च + अन्ते
व्याधितस्यौषधम् = व्याधितस्य + औषधम्
सुखस्यानन्तरं = सुखस्य + अनन्तरं
दुःखस्यानन्तरम् = दुःखस्य + अनन्तरम्

३. पद का काम :- (क) — पहले तथा आठवें श्लोक को कण्ठस्थ करो।
(ख) — दूसरे तथा चौथे श्लोक का अर्थ लिखो।

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

द्वादशः पाठः
(विद्यालिङ्)

शब्दाचारः

मनुष्यः ईश्वरम् भजेत् । देवान् अर्चयेत् । ब्राह्मणेभ्यः दक्षिणाम् दानम् च यच्छेत् । गुरून् नमेत् । आचार्यान् अर्चयेत् । नित्यम् शुद्धवेषः प्रसन्नचित्तः च स्यात् । सर्वदा निश्चिन्तः, निर्भयः, शान्तिकः, आस्तिकः नम्रः च स्यात् । सत्यम् वदेत् । असत्यम् न वदेत् । परान्नम् न अभिलषेत् । अन्यधनम् न कथयेत् ।

राष्ट्रे नागरिकाः शान्तिकाः शान्तिकाः भवेयुः । राज्यस्य आज्ञाः पालयेयुः । स्वकर्तव्यानि पालयेयुः । निर्बलानाम् दीनानाम् च त्राणाय न हरेयुः । राष्ट्रस्य रक्षाय स्वधनान् अपि उत्सृजेयुः । राज्यान्धिकारिणः नागरिकाणाम् हितम् रक्षेयुः । लोकानाम् अभिरक्षणाय अभिकारान् रक्षेयुः । तौ राजपुरुषौ चौरेभ्यः नगरम् रक्षेताम् । स्त्रीपुरुषौ सदने वसेताम् ।

त्वम् देवताभ्यः अर्हित्वा गुरुभ्यः आचार्येभ्यः च आदृत्य भोजनम् न भक्षेः । वस्त्रपूतम् जलम् पिबेः । गुरुम् अनत्वा पाठम् न पठेः । हे नागरिकाः ! यूयम् ब्राह्मणान् न निन्देत । दुष्टान् गुरून् नृपान् च न अभिनन्देत । हे छात्राः ! यूयम् अपटवः न स्यात । हे रामश्यामौ ! युवाम् गुरुम् नत्वा गृहम् गच्छेतम् । हे निर्मलाक्षमते ! युवाम् संघम् कृत्वा भजनम् गायेतम् ।

गुरो ! किम् अहम् पाठम् पठेयम् ? किम् अहम् याचकेभ्यः धनम् अर्पयेयम् ? किम् वयम् दासेभ्यः रक्षाय युद्धं युद्धम् शत्रून् च जयेम ?

अभ्यास

१. वर्णशब्दः :- अर्च् - पूजा करना
अभिनन्द् - स्तुति करना
अभिनन्दित - तिरस्कार करना
गुरुवेषः - साधु बाबा वाला
उत्कोच - रिश्वत
अर्हित्वा - बिना किसी अपेक्षा के
वस्त्रपूतम् - कपड़े से छाना हुआ
याचक - भिखारी

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

2. निम्नलिखित के लिंग :—

पत्र पत्रालय पत्रिका
पत्रिका पत्रालय पत्र
पत्रालय पत्रिका पत्र

3. पद का अर्थ :—

(क). शिशु लोरियां गाकर, अपने विचार इन वाक्यों में
प्रयोग ~~करो~~ कीजिये :—

दिनकर, आगंतुक :, पत्रालय, पुस्तक, [illegible]

(ख). अनुवाद कीजिये :—

1. मनुष्य को सत्य बोलना चाहिये और आलस्य का परित्याग
करना चाहिये।
2. तुम्हें परिश्रम करके आजीविका चलानी चाहिये।
3. देश के लोगों को आलसी होना चाहिये।
4. हे ईश्वर! क्या तुम एक गरीब को खाना चाहिये
5. पिताजी पत्रालय से पत्रिका ले आये।
6. हे भगवान! निर्धनों को धन मत दीजिये।

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

अध्याय: पाठ:

~~अभ्यास पदच्छेद~~

सूक्तय:

१ - दुर्लभ: प्राकृतं मित्रं दुर्लभ: क्षमकृत् सुत:।
दुर्लभा सदृशी भार्या दुर्लभ: स्वजन: प्रिय:॥

२. - साध्वनां दर्शनं पुण्यं तीर्थभूता हि साध्व:।
तीर्थं फलति कालेन सद्य: साध्वसमागम:॥

३. - शान्तितुल्यं तपो नास्ति न संतोषात् परं सुखम्।
न तृष्णाया: परो व्याधि: न च धर्मो दयासम:॥

४. यादसानां भयं वातात् पक्षाणां शरदाद् भयम्।
पर्वतानाम् भयं वज्रात् साधूनाम् दुर्जनाद् भयम्॥

५. प्रथमे नार्जिता विद्या द्वितीये नार्जितं धनम्।
तृतीये नार्जितं पुण्यं चतुर्थे किं करिष्यति॥

६. हस्तस्य भूषणं दानं सत्यं कण्ठस्य भूषणम्।
कर्णस्य भूषणं शास्त्रं भूषणै: किं प्रयोजनम्॥

७. पय: पानं भुजङ्गानां केवलं विषवर्धनम्।
उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये॥

८ - सत्येन धार्यते पृथ्वी सत्येन तपते रवि:।
सत्येन वायवो वान्ति सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्॥

९ - पुस्तकेषु या विद्या परहस्तेषु यद्धनम्।
उत्पन्नेषु न कार्येषु न सा विद्या न तद्धनम्॥

१०. सत्यं माता पिता ज्ञानं धर्मो भ्राता दया सखा।
शान्ति: पत्नी क्षमा पुत्र: षडेते मम बान्धवा:॥

शब्दार्थ

१. शब्दरूप: - प्राकृतम् = सच्चा
क्षमाकृत् - पृथ्वी का रक्षा करने वाला
सत्यं हि - सत्य
CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

2. निम्नलिखित के लिंग :—

पठन पठनम पठ्यम्
पठः पठनम् पठन
पठेयम् पठेत पठेत्

3. वर का काम :—

(क). निम्नलिखित शब्दों के, पर्याय कर वाक्यों में प्रयोग ~~करो~~ कीजिये :—

ईश्वरः, भाग्यम्, पण्डितम्, गृहम्, रक्षाय।

(ख). अनुवाद कीजिये :—

1. मनुष्य को सत्य बोलना चाहिये और चोरी का त्याग करना चाहिये।
2. तुम्हें संध्या करके भोजन खाना चाहिये।
3. देश के लोगों को धार्मिक होना चाहिये।
4. हे गुरुदेव! क्या मुझे एक गीत को गाना चाहिये।
5. पाप कर्मों में वाद्य ही शीघ्र बढ़ा हो।
6. हे भगवन्! निर्धनों को धन मत दीजिये।

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

अथ विंशः पाठः

~~प्रकाशित पद्यानि~~

सूक्तयः

१ - दुर्लभः प्राकृतं मित्रं दुर्लभः क्षमाकृत सुतः ।
दुर्लभा सदृशी भार्या दुर्लभः स्वजनः प्रियः ॥

२ - साध्वनां दर्शनं पुण्यं तीर्थभूता हि साध्वः ।
तीर्थं फलति कालेन सद्यः साधुसमागमः ॥

३ - शान्तितुल्यं तपो नास्ति न संतोषात् परं सुखम् ।
न तृष्णायाः परो व्याधिः न च धर्मो दयासमः ॥

४ - यादसानां भयं वातात् पक्षिणां शरशरात् भयम् ।
पर्वतानां भयं वज्रात् साधूनां दुर्जनाद् भयम् ॥

५ - प्रथमे नार्जिता विद्या द्वितीये नार्जितं धनम् ।
तृतीये नार्जितं पुण्यं चतुर्थे किं करिष्यति ॥

६ - हस्तस्य भूषणं दानं सत्यं कण्ठस्य भूषणम् ।
कर्णस्य भूषणं शास्त्रं भूषणैः किं प्रयोजनम् ॥

७ - पयः पानं भुजङ्गानां केवलं विषवर्धनम् ।
उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये ॥

८ - सत्येन धार्यते पृथ्वी सत्येन तपते रविः ।
सत्येन वायवो वान्ति सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम् ॥

९ - पुस्तकस्था या विद्या परहस्तेषु यद्धनम् ।
उत्पन्नेषु च कार्येषु न सा विद्या न तद्धनम् ॥

१० - सत्यं माता पिता ज्ञानं धर्मो भ्राता दया सखा ।
शान्तिः पत्नी क्षमा पुत्रः षडेते मम बान्धवाः ॥

१,५ भ्यास

१ - नमशोढः - प्राकृतम् - सच्चा
क्षमाकृत् - धीरज धरने वाला
सद्यः - शीघ्र
व्याप्त - व्यापक

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

पथः - दुर्ग
गुल्मः - सेना
गोष्ठी - समाज

2. समास :- गोष्ठी = गो + गोष्ठी
मरुस्थल = मरु + स्थल
नरेन्द्र = नर + इन्द्र

3. घर का काम :-
(क) पढ़ना तथा गाँव पथ सम्बन्ध कोष्ठक।
(ख) खाना तथा पीना पथों का गमन तिरछा।

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

(इकारान्त उकारान्त नपुं०)

जाड्यापाः वारि पवित्रम् भवति। गौतमः नक्तम् दधि न भक्षयति। लोकाः मधूनि वनम् अपाश्नन्। मधुना शरीरस्य रोगाः नश्यन्ति। महाराजः रणजित्तालहेः अक्षणी काणः अपालीत्, परन्तु स्ववलेन तः शत्रून् जित्वा अपरिवर्त परजाम्बुदेशं राज्यम् अकरोत्। समुद्रस्य वारीणि मधुराणि न भवन्ति। वैद्यना अक्षीणि औषधानि ददति। भोजनम् भक्षयित्वा वारि न पिबत। नक्तम् दधि न खादत।

रवीन्द्रः दधीनि शर्कराम् मिश्रयति। बालस्य शरीरम् मृदु भवति। अहम् प्रीतिदानम् बहूनि फलानि भक्षयामि। सुरेन्द्रस्य जानुनि क्षतोः अपाक्षीत्। रामस्य मुखम् लघु अस्ति। ललनाः वारिणि कूपम् अपाश्नन्। नराः अक्षिभ्याम् पश्यन्ति। पशवः च अपि अक्षिभ्याम् पश्यन्ति। लोकेषु इदम् प्रसिद्धम् यत् काकः एकेन अक्ष्णा पश्यति। शिवस्य त्रीणि अक्षीणि सन्ति। हरः तृतीयेन अक्ष्णा कामदेवम् अदहत्। पर्वतस्य सानुषु वृक्षाः सन्ति। वृक्षेषु मधुमक्षिकाः वसन्ति। मधुमक्षिकाः वनानि पुष्पाणाम् रसम् च पिबन्ति, ~~मधूनि च उद्दिश्यन्ति तानि एव~~ मधूनि च वमन्ति। यदा मधुमक्षिकाः ~~दंशन्ति~~ दशन्ति तदा दुष्टानाम् बालकानाम् अक्षीणि पतन्ति।

अभ्यासः

2. शब्दरूपाणि:—

वारि	- पानी	नक्तम्	- रात को
दधि	- दही	मधु	- शहद
मधु	- शहद	लघु	- छोटा
अक्षि	- आँख	लतिका	- लता
अक्षि	- हड्डी	कूप	- कुआं
जानु	- घुटना	हर	- शिव
अक्षु	- आंसू	वमन्	- वमन करना
		दह्	- जलाना

2. लिङ्गानुसारेण शब्दाः:— वारि, दधि तथा मधु इत्यादि शब्दाः नपुंसकलिङ्गे सन्ति।

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

पद्म : - दूसरा
अनुज - छोटा
अग्रज - बड़ा

2. लोपयोग :- नागेन्द्र = नग + अग्रज
महेन्द्र = पद्म + अग्रज
नरेन्द्र = नर + अग्रज

3. पद का काम :-
(क) पहला तथा तीसरा पद संबोधन का है।
(ख) दूसरा तथा चौथा पद का अर्थ विशेष है।

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

(इकारान्त उकारान्त नपुं०)

गङ्गायाः वारि पवित्रम् भवति। गौतमः नक्तम् दधि न भक्षयति। लोकाः मधूनि वनम् अगच्छन्। मधुनः शरीरस्य रोगाः नश्यन्ति। महाराजः रणजित्तालहेः अक्षीणि कोपात् अपतन्, परन्तु स्वबलेन तान् शत्रून् जित्वा अरिबलं पराजित्य स्वदेशं राज्यम् अकरोत्। समुद्रस्य वारीणि मधुराणि न भवन्ति। वैद्यः अक्षीणि औषधानि ददाति। भोजनम् भक्षयित्वा वारि न पिबत। नक्तम् दधि न खादत।

रवीन्द्रः दध्नि शर्कराम् मिश्रयति। बालस्य शरीरम् मृदु भवति। अहम् प्रतिदिनम् बहूनि फलानि भक्षयामि। सुरेन्द्रस्य जानुनि क्षतात् अस्रम् अपतत्। रामस्य मुखम् लघु नास्ति। ललनाः वारि कूपम् अगच्छन्। नराः अक्षिभ्याम् पश्यन्ति। पशवः न खगाः अपि अक्षिभ्याम् पश्यन्ति। लोकस्य इदम् प्रसिद्धम् मतम् काकः एकेन अक्ष्णा पश्यति। शिवस्य तीनि अक्षीणि सन्ति। हरः तृतीयेन अक्ष्णा कामदेवम् अदहत्।

पर्वतस्य सानुषु वृक्षाः सन्ति। वृक्षेषु मधुमक्षिकाः वसन्ति। मधुमक्षिकाः वारीणि, पुष्पाणाम् रसम् च पिबन्ति, [illegible] च मधूनि च ददति। यदा मधुमक्षिकाः दंशन्ति तदा दुष्टानाम् बालकानाम् अक्षीणि पतन्ति।

अभ्यासः

१. अधोरेखाङ्कितपदानां विभक्तिं वचनं च लिखत।

२. अधोरेखाङ्कितपदानां स्थाने सर्वनामपदानि लिखत यथा मधु → तत्

३. कोष्ठकेषु दत्तानां पदानां सप्तम्येकवचनान्तरूपाणि रिक्तस्थानेषु पूरयत।

वारि - पानी
दधि - दही
मधु - शहद
अक्षि - आँख
अस्थि - हड्डी
जानु - घुटना
अस्रु - आँसू
नक्तम् - रात को
मृदु - कोमल
लघु - छोटा
ललना - स्त्री
कूप - कुआँ
हर - शिव
नम् - नमन करना
दह् - जलाना

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

3. घर का काम :—

(क) सिर्फ तलाक के आधार बताइये :—

1. व्यभिचार ...
2. दण्डाज्ञा दिये ... काल: अवधि
3. मानसिक ... क्रूरता अवधि
4. ...
5. ...
6. सुरक्षित ... तलाक: अवधि

(ख) तलाक में अनुवाद कीजिये :—

1. शादी से शारीरिक के दोष तलाक होते हैं।
2. तुम्हारे बहुत पास खाते हो।
3. यह मेरे पत्नी को, पोतों से दूरवर्त है।
4. ये बातों को मान्य, क्या घर पाने के योग्य।
5. दिन को न मानसी स्थापित के कामदेव को जाना दिया।

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

प्रस्तावना: पाठ:

(किम् शब्द)

क: रामायणम् पठति ?

बालकौ: रामायणम् पठतः ।

के रामायणम् पठन्ति ?

कदा: सर्वे च रामायणम् पठन्ति ।

के वनम् गच्छन्ति ?

सीता, राम: लक्ष्मण: च वनम् गच्छन्ति ।

राम: कम् पुस्तकम् ?

राम: रावणम् प्रहरति ।

बालकौ: काम् पुस्तकाम् ?

बालकौ: रामायणम् पठावः ।

* एषः कीदृश: पुरुषः अस्ति
एषः कस्य पुरुषस्य अस्ति, इदं पुरुषस्य मम
इदं तत्, यौवने च रामस्य इदं ।
त्वम् कीदृशं पुरुषम् पश्यसि ?
एषम् रामायणम्, महाभारतम्, शकुन्तलाम्
च पठामि ।

बालिका: कस्य: मातरौ पश्यन्ति ?
बालिका: बालकस्य: मातरौ पश्यन्ति ।
एषम् छात्र: कस्मै पत्रम् लिखति ?
एषम् छात्र: मातृभ्यै पत्रम् लिखति ।
बालौ: कस्याम् मातरौ हरन्ति ?
बालौ: बालिकायाम् मातरौ हरन्ति ।
कश्चित् कश्चित् समुद्रम् रक्षन्ति सन्ति ।
अस्माकम् सर्वेषु एव रक्षन्ति सन्ति ।

एषः बालः

१. नपुंसकलिङ्गः बालकम् - ~~रामायण को रक्षति~~ एक बालक का नाम
शकुन्तला - एक बालक का नाम

२. सामान्य कालिक - किम् शब्द के रूप पुंलिङ्ग तथा
नपुंसकलिङ्ग में समान पाठ १२ वें में देखिये ।

३. पद का क्रम :
क) - किम् सर्वनाम शब्द का वाक्य में प्रयोग का क्रम :-

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

कोण, न्यून, $\frac{1}{2}$ कोण, $\frac{1}{4}$, $\frac{1}{2}$ समकोण।

(ख) अनुच्छेद का उत्तर :—

१. तीन बजे छोटा कांटा घड़ी के मध्य रेखा पर है।

२. यह चित्र बालक का प्रतिरूप है।

३. तुम पेन्सिल को चित्र के लिए प्रयोग करते हो।

४. सीधी रेखा के साथ वक्र को जोड़ो।

५. चित्र में दो बालकों ने पाठ को पढ़ा।

६. प्रत्येक गोलवर्ग में चित्र का दर्शन है।

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

षड्विंशः पाठः

(यत्, तत्, सर्व)

सर्वम् पुराणम् साधु न भवति। अपि तु लोके सर्वे लोकाः पुराणम् इच्छन्ति। ये जनाः सर्वाणि कर्माणि कृत्वा ईश्वरम् भजन्ति तेषाम् जीवनम् धन्यम् भवति। यानि यानि पुस्तकानि यूयम् इच्छथ तानि तानि पठत। ईश्वरः च कृपया सर्वे जनाः सुखम् वसन्ति। साधवः सर्वेषाम् परोपकाराय यतन्ते कुर्वन्ति। ये धनम् न विद्याम् न तपः न च दानम् तेषाम् जीवनम् किम् अपि धन्यम् न भवति। तेषाम् धनम्, धनम् च न भवति यूयम् तेभ्यः धनम् धनम् च मा यच्छत। ये परेषाम् उपकाराय सत्यम् कुर्वन्ति तेषाम् जीवनम् धन्यम् भवति। सत्यम् गृहे पाठशालायाम् कृषिक्षेत्रेषु गुरुकुलेषु च पूजा न भवति तत् गृहम् श्मशानसदृशम् भवति।

यस्मात् कारणात् त्वम् अद्य पाठशालाम् गच्छसि तस्मात् एव कारणात् अहम् पाठशालाम् गच्छामि। यत् यत् कार्यम् शुभम् भवति तत् तत् एव कार्यम् लोके अपि भवति। एव मार्गे रामः वनम् अगच्छत् तेन एव मार्गेण लक्ष्मणः सीता च वनम् अगच्छताम्। हे शिष्याः! यत् यत् गुरुः आदिशति तत् तत् पालय। विद्याधनम् सर्वेषाम् धनानाम् उत्तमम् भवति। तस्मात् दत्तः सर्वेषु बालेषु चतुरतमः भवति।

अभ्यासः

२. अर्थम् वदत:-

सर्वम् - प्रत्येक

पुराणम् - पुराणा

पठ - पढ़ना

श्मशानसदृशम् - श्मशान के समान

चतुरतमः - सब से अधिक चतुर

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

2. [illegible] के लिए :—
[illegible] , [illegible] , [illegible] शब्दों के लिए [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

3. ~~[illegible]~~ [illegible] का काम :—

(क) [illegible] के लिए [illegible] :—

१. क्या सब बातें याद आया [illegible] ?
२. हर एक पुरानी चीज़ को [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
३. [illegible] के बाद न किया है पर न ~~[illegible]~~ [illegible] पर न हो तो यह [illegible] है।
४. जो जो याद [illegible] आते हों उन को [illegible]
५. [illegible] देश का राजा [illegible] है, [illegible] उस को नमस्कार करना [illegible]
६. [illegible] ~~[illegible]~~ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

कालः (समयः)

सरला — सारिवकुशीले। अहोरात्रे कति होराः भवन्ति?

सुशीला — चतुर्विंशतिः होराः।

सरला — कथय, सप्ताहे कति दिनानि भवन्ति?

सुशीला — सप्त। इदम् सप्ताहे: इति नाम्नः एव स्पष्टम्।

~~विमला~~ सरला — सुशीले! जानासि सप्ताहे कानि कानि दिनानि भवन्ति? तेषाम् नामानि च कथय।

सुशीला — आदौ सोमवारः, ततः मङ्गलवारः, बुधवारः, बृहस्पतिवारः, शुक्रवारः, शनिवारः च। मङ्गलवारम् सोमवारम् अपि वदन्ति, बृहस्पतिम् च गुरुवारम्, शनिवारम् ~~च शनैश्चरवारम्~~ शनैश्चरवारम् अपि च कथयन्ति। रविवासरे विद्यालयेषु, कार्यालयेषु तथा न्यायालयेषु अवकाशः अवकाशः च भवति। विद्यालयेषु अपि कृषि॰ विकृषि॰ न भवति।

सरला — माले कति सप्ताहाः पक्षाः च भवन्ति?

सुशीला — सरले! सत्यम् एव त्वम् सरला असि। इदम् अपि न जानासि यत् माले चत्वारः सप्ताहाः भवन्ति। द्वौ च पक्षौ भवतः शुक्लपक्षः, कृष्णपक्षः च। शुक्लपक्षे चन्द्रः वृद्धिं गच्छति, कृष्णपक्षे च क्षीणः भवति।

सरला — ~~वर्षे~~ एकादश वर्षे कति मासाः भवन्ति के च ऋतवः इति नाम्नः कथय।

सुशीला — द्वादश मासाः। यथा चैत्रः, वैशाखः, ज्येष्ठः, आषाढः, श्रावणः, भाद्रः, आश्विनः, कार्तिकः, मार्गशीर्षः, पौषः, माघः, फाल्गुनः च। अत्र परस्परम् षड् षड् ऋतवः भवन्ति। यथा ग्रीष्मः, वर्षा, शरत्, हेमन्तः, शिशिरः, वसन्तः च।

द्वौ द्वौ मासौ ऋतुः भवति। यथा वैशाखज्येष्ठौ ग्रीष्मः, आषाढश्रावणौ वर्षाः, भाद्रपदाश्विनौ शरत्, कार्तिक-मार्गशीर्षौ हेमन्तः, पौषमाघौ शिशिरः, फाल्गुनचैत्रौ वसन्तः च इति।

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

अभ्यास:

१. वचन बदलें :— अहोरात्रम् — दिन रात
कवि — कवियों
वृक्षम् — वृक्ष को
नियमितम् — नियमित
कृषकाः — कृषक का

२. लिंग बदलें :— दिन, पक्ष, साल तथा अहोरात्र के लिंग बताएं।

३. घर का काम :—

(क). शब्दों के अर्थ लिखकर संस्कृत में वाक्य बनाइये :—
अहोरात्रम्, कवि, विद्यालय, अध्यापकाः, पठ्।

(ख) अनुवाद कीजिये :—

१. दो दो साल का एक अयन होता है।
२. एक साल में छः पक्ष होते हैं, शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष।
३. दिन रात में चौबीस घंटे होते हैं।
४. वर्षा ऋतु में सब अध्यापक में घूमते हैं और साल को पढ़ाते हैं।
५. रविवार को विद्यालय, व्यायामालय तथा व्यायामालय में अवकाश होता है।

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

अष्टादशः पाठः

पद्यानि

१ - माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः ।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा ॥

२ - श्रमेण हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः ।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः ।

३ - उत्सवे व्यसने चैव दुर्भिक्षे राष्ट्रविप्लवे ।
राजद्वारे श्मशाने च यः तिष्ठति स बान्धवः ॥

४. यदा सत्संगरहिता मोक्ष्यसि मोक्ष्यसि ।
तदा सज्जनगोष्ठीषु पतिष्यसि पतिष्यसि ॥

५. - कोऽतिभारः समर्थानां किं दूरं व्यवसायिनाम् ।
को विदेशः सविद्यानां कः परः प्रियवादिनाम् ॥

६. - बन्धुः को नाम दुष्टानां कुप्यते को न याचितः ।
को न दृप्यति वित्तेन कस्त्यजेत् को न पण्डितः ॥

७. क्षमा शत्रौ च मित्रे च यतीनामेव भूषणम् ।
न्यायश्चैव सदैवेषु नृपाणामेव दूषणम् ॥

८. अर्थो हि परमं नार्या भूषणं भूषणैर्विना ।
एषा विरहिता तेन शोभनाऽपि न शोभना ॥

पदार्थाः

१ - नपुंसकशब्दः - बक - बगला
श्रमेण - परिश्रम
मनोरथैः - मन की इच्छा
व्यसने - विपत्तिः
सभा - सभा
समर्थ - सामर्थ्यवाला
व्यवसायिनाम् - परिश्रम करनेवालों के लिये
सुप्तस्य - सोये हुए
सिंहस्य - सिंह के लिये

प्रियवादिनाम् - प्यारा बोलनेवालों के लिये
दृप्यति - घमण्ड करता है
मौनं - चुप्पी

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

१२ घण्टे

१. पर्यायवाची :— अहोरात्रम् — दिन रात
कपि — बन्दर
वानरः — बन्दर
नियमितम् — बराबर
कृषकपत्नी — किसान की पत्नी

२. समास के नाम :— दिनरात, पक्षी, मालाएँ तथा अहर्निशम्
के नाम लिखो।

३. घर का काम :—

(क). शब्दों के अर्थ लिखकर संस्कृत में वाक्य बनाइये :—
अहोरात्रम्, कपि, लघ्वाहरः, पयकारः,
पद्म।

(ख) अनुवाद कीजिये :—

१. दो दो मालाएँ मिलकर एक अहर्गण होता है।
२. एक माला में दो पद्म होते हैं, शतं पद्मा पयोहरे
कृष्णा पद्मा।
३. दिनरात में चौबीस घंटे होते हैं।
४. वर्षा ऋतु में सभी पयकारा में घूमते हैं, पयोहर
मालाओं को धारते हैं।
५. रामवर को विद्यालयं, कार्यालयं तथा व्यायामालयं
में पयकारः होता है।

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

अष्टादशः पाठः

प्रकाशित पद्यानि

१ - माता शत्रुः पिता वैरी येन बालो न पाठितः ।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा ॥

२ - श्रमेण हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः ।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः ।

३ - उत्सवे व्यसने चैव दुर्भिक्षे राष्ट्रविप्लवे ।
राजद्वारे श्मशाने च यः तिष्ठति स बान्धवः ॥

४ - यदा सत्संगरहितो मोक्ष्यति मोक्ष्यति ।
तदा सज्जनगोष्ठीषु पतिष्यति पतिष्यति ॥

५ - को ऽतिभारः समर्थानां किं दूरं व्यवसायिनाम् ।
को विदेशः सविद्यानां कः परः प्रियवादिनाम् ॥

६ - बन्धुः को नाम दष्टानां कुप्यते को न याच्यतः ।
को न दृप्यति वित्तेन कष्टं को न पण्डितः ॥

७ - क्षमा शत्रौ च मित्रे च यतीनामेव भूषणम् ।
अपराधिषु सर्वेषु नृपाणां सैव दूषणम् ॥

८ - अर्तो हि परमं नार्या भूषणं भूषणैर्विना ।
एषा विरहिता तेन शोभनाऽपि न शोभना ॥

अन्वयाः

१ - वयं शब्दः - बक - बगला
श्रमेण - परिश्रम
मनोरथ - मन की इच्छा
व्यसन - विपत्तिः
सीदति - नष्ट
समर्थ - सामर्थ्यवान्
व्यवसायिनाम् - परिश्रमकरनेवालों के लिये
दृप्यति - घमण्ड करता है
याति - जाता है

द्विषतां दुःखदानां - शत्रुओं को दुःख देनेवालों के लिये ।

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

2. संज्ञा :—

वदा sलम्बगोऽक्षि = वदा + पात्रसम्बगोऽक्षि

का sतिमार: = का; पातिमार:

लैव = सा + रेव

भूपेणर्तिना = भूपेण: + क्षिणा

शोभना sर्ध = शोभना + पार्थ।

3. पद का काम :—

(क) कोई दो शब्द एक कर्तृपद करो :—

(ख) पन्तिम दो शब्दों का अनुवाद 1 से 2½ में दिखाओ।

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

प्रथमः पाठः

(उपसर्ग, एकम्, युष्मद्)

एषः एषा एतत् पण्डितः गच्छति। किम् त्वम् तत्र गच्छसि उताऽगच्छसि? रामः माम् सर्वत्र अनुसरति, किम् तः त्वाम् एषि अनुसरति वा। एकम् तटम् मनोहराणि पुष्पाणि सन्ति। किम् त्वम् महत्याम् मञ्जूषायाम् फलानि आनयसि। मम पिता प्रातः उद्याने विहरति, किम् तव भ्राता एषि प्रातः उद्याने विहरति। एकाकिनम् विद्यालये दृष्ट्वा युष्मत्कार्यम् एषसि। किम् मूढमानम् विद्यालये एषि कारणात् युष्मत्कार्यम् एषसि।

अहम् एतु मयि यत् एषः वायुः शीतः एति। शिष्याः सर्वदा गुरून् अनुगच्छन्ति। यदा मम सहोदरः गृहात् बहिः निर्गच्छति तदा अहम् गृहम् प्रविशामि। ये मनुष्याः उद्यन्ति, ते यानम् अधिरोहन्ति। यदा धर्मः क्षीणः भवति, तदा विष्णुः अवतरति। क्षौत्रियाः दोषान् संहरन्ति। ते साधवः परेषाम् अनर्थान् अपहरन्ति ते पापाः एव सन्ति। यदा मम देशस्य वीराः युद्धाय गच्छन्ति तदा वयम् पदा गच्छन्ति। गङ्गा यमुना च हिमालयात् निर्गतः।

अभ्यासः

1. धातवः —

गम् = जाना	एषा + गम्	=	एषा
	एक + गम्	=	गच्छ
वा = न जाना	वा + कृ	=	वा
हृ (हर) चुराना	वि + हृ	=	चुराना
	वि + हृ	=	दूर करना
गम् = गन्तव्य की ओर	प्र + गम्	=	प्रस्थान करना
भू = होना	सम् + भू	=	उत्पन्न होना
	प्र + भू	=	समर्थ होना
	परा + भू	=	हार जाना

2. [illegible] :—

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

2. घर के लिए काम :—

अनुवाद करो :—

१. मैं घर के पुस्तक लाऊंगा क्या तुम नहीं लाओगे ?

२. ~~पहाड़ी~~ के गाड़ी नया पहुना हिंसवदी है ।

३. जब बेर बाग पहार करते हैं तो हुद्द स्वयं ही गद्द हो जाते हैं ।

४. हम गेंद हमारे मित्र पास भूमण करते हैं क्या तुम भी हमारे साथ चलोगे ?

५. हम मैं गाम तक के स्थानक पहर है तुम मैं मौ तक के स्थानक पहर है ?

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

त्रिंशः पाठः

(~~कृष्णः पुरस्कारं~~)

द्वौ छात्रौ

यज्ञदत्तः - भोः सोमदत्त, कुशलं त्वम् ?

सोमदत्तः - कुशलः अहम् परमेश्वरस्य कृपया ।

यज्ञदत्तः - कस्यां कक्षायां पठसि ?

सोमदत्तः - अहम् षष्ठी-कक्षायां पठामि ।

यज्ञदत्तः - कति छात्राः सन्ति कक्षायाम् ?

सोमदत्तः - मम कक्षायाम् चत्वारिंशत् छात्राः सन्ति ।

यज्ञदत्तः - किम् किम् पठसि त्वम् ?

सोमदत्तः - अहम् अधुना-मासम्, गणितम्, सामान्यं विज्ञानम्, सामाजिकम् ज्ञानम्, हिन्दी ~~संस्कृत~~ मासम्, परञ्च संस्कृत-मासम् च पठामि ।

यज्ञदत्तः - किम् त्वम् संस्कृतम् न पठसि ?

सोमदत्तः अयम्, मित्र ! पठामि संस्कृतम् अपि ।

यज्ञदत्तः यूयम् तत्र किम् संस्कृतपुस्तकम् पठत ?

सोमदत्तः वयम् ..... पठामः ।

यज्ञदत्तः तव विद्यालये ~~कक्षायाम्~~ कति अध्यापकाः सन्ति ?

सोमदत्तः तत्र अष्टादश अध्यापकाः सन्ति ।

यज्ञदत्तः कः ~~त्वाम्~~ भवन्तम् संस्कृतम् पाठयति ?

सोमदत्तः प्रधानाध्यापकः त्वयम् अस्मान् संस्कृतम् पाठयति ।

यज्ञदत्तः कः भवन्तम्, प्रधानाध्यापकः ?

सोमदत्तः श्रीमान् जगदम्बाप्रसादः ~~मम~~ अस्माकम् प्रधानाध्यापकः अस्ति ।

यज्ञदत्तः कति कक्षाः सन्ति तव विद्यालये ?

सोमदत्तः दशसु कक्षाः सन्ति मम विद्यालये ।

यज्ञदत्तः नु संस्कृते भाषणं कर्तुम् अभ्यासः ?

सोमदत्तः अथ किम्, सरलया भाषया भाषणं कर्तुम् वयम् अभ्यस्ताः ।

यज्ञदत्तः अधुना आगामि रविवासरे आगमनाय इदानीम् ।

सोमदत्तः कृपया धन्यवादाः, अत्र पुनर्दर्शनाय, शुभाः तव सन्तु ।

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

अभ्यास

१. शब्द रूप :— कुशा - कुशा पुंल्लिंग
तृण - (पुंल्लिंग में अन्त है)
चत्वारिंशत् - चालीस
आङ्गल भाषा - अंग्रेजी
अस्ति क्रिया - है
अनुशासित - अनुशासन में रहने वाला
बहव: - बहुत
अध्याय: - अध्याय (पुंल्लिंग)
प्रदर्शनाय - लिए प्रदर्शन के लिए

२. ✗ है वाक्य इस विलोम का अनुवाद करें।

३. पद का काम :—

(क) वाक्यों में प्रयोग करें :—

कुशा, तृण, अस्ति क्रिया, उपसर्ग,
अनुशासित, प्रदर्शनाय।

(ख) अनुवाद कीजिये :—

तुम किस विद्यालय में पढ़ते हो। वहां
किसने कक्षा में, प्रवेश परीक्षा में
किसने अनुत्तीर्ण है। क्या तुम
तुम संस्कृत भी पढ़ते हो। तुम्हें संस्कृत
कौन पढ़ाता है। तुम्हारे अध्यापक
का क्या नाम है। इस जाड़े में
इसका

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

एकत्रिंशः पाठः

स्मरणीयानि पद्यानि

१- त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुः च सखा त्वमेव ।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव ॥

२. सा भार्या या गृहे दक्षा
सा भार्या या प्रजावती ।
सा भार्या या पतिप्राणा
सा भार्या या पतिव्रता ॥

३- या नात्मजे न च गुरौ न च भृत्यवर्गे
दीने दया न कुरुते न च बन्धुवर्गे ।
किं तस्य जीवितफलेन मनुष्यलोके
काकोऽपि जीवति चिराय बलिं च भुङ्क्ते ॥

४. येषां न विद्या न तपो न दानं
ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः ।
ते मृत्युलोके भुवि भारभूताः
मनुष्यरूपेण मृगाः चरन्ति ॥

५. भोगा न भुक्ता वयमेव भुक्ताः
तपो न तप्तं वयमेव तप्ताः ।
कालो न यातो वयमेव याताः
तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णाः ॥

६. विद्या विवादाय धनं मदाय
शक्तिः परेषां परपीडनाय ।
खलस्य साधोर्विपरीतमेतद्
ज्ञानाय दानाय च रक्षणाय ॥

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtizèd by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

७ - सतं भुजङ्गः शिखरं दलम्बुदः
शाखा विहङ्गः कुसुमानि भूरुहः ।
गुणास्तथते दुर्जनैः समस्तैः
न चन्दनं भुरयति शीतलत्वम् ॥

८. पुत्रः न तं त्यात् स्वजनो न तं त्यात्
पिता न तं त्याद जननी न सा त्यात् ।
दवो न तं त्यात न पतिः च तं त्यात्
न सोचयेत् यः समुपतभूत्यम् ॥

शब्दार्थ

← इन पद्य

१ - वृक्षवाचक :— रोहिण - निम्ब
शिंशपा - शीशम
देवदेव - देवताओं का देवता
दारु - पुत्र
प्रजावती - सन्तान वाली
गोपालक - ग्वाला
भुवि - पृथ्वी, पर
भूमि - पृथ्वी
विषाद - अवसाद
भुजङ्ग - सांप
दलाम्बुद - बादल
विहङ्ग - पक्षी
भूरुह - भूमि से उत्पन्न होने वाला

समुपतभूत्यम् - पोषण किये हुए को

२. सब पदों का वर्गीकरण करो ।

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

द्वात्रिंशः पाठः

कथा

स्वामिभक्ता चात्रा

यदा महाराजः संग्रामसिंहः स्वर्गम् अगच्छत् तदा तस्य ज्येष्ठः पुत्रः विक्रमादित्यः राज्यं अधिकृतः। परम् सः अयोग्यः आलीत्। सामन्ताः तम् राजासनात् अपानयन्। उत्तराधिकारी कनिष्ठः कुमारः उदयसिंहः तावत् शिशुः एव अभवत्। दायित्वं वनवीरः नाम्नः राजकुमारस्य संरक्षकः अभवत्। सः एव सर्वाणि राजकार्याणि निरवहत्।

वनवीरस्य हृदये राज्यलोभः उदगच्छत्। सः एकदा निशीथे शयानम् विक्रमादित्यम् अवधीत् अहन्। कारात् सेवकः गत्वा उदयसिंहस्य चात्रिम् पन्नाम् अबोधयत्। सा च शीघ्रम् एव राजशिशुम् उदयसिंहम् फलकरण्डकायाम् निधाय, ताम् च गृहीत्वा सरितायाः तटे प्रतीक्षितं भृत्यम् अपादशत्। सः अपि ताम् करण्डकाम् गृहीत्वा सत्वरम् नदीतटम् प्रातिष्ठत। चात्री च तदा महद्-आश्चर्यम् स्वपुत्रम् राजाशिशोः पर्यङ्के न्यवेशयत्। अपि च एव वनवीरः कृपाणम् आदाय राजप्रासादम् अभिदशत्। अपृच्छत् च 'कुत्र अस्ति उदयसिंहः?' इति। सा च हृदयं पाषाणम् निधाय कम्पितेन करेण पर्यङ्कं संकेतम् अकरोत्।

एकेन एव प्रहारेण वनवीरः शिशोः द्वे खण्डे अकरोत्। निरगच्छत् च सत्वरम् एव। चात्री च पुत्रस्य शवम् काके निधाय नदीतटम् अगच्छत् तम् च तत्र जले न्यपातयत्। इत्थम् सा स्वामिभक्ता पन्ना स्वपुत्रं परित्यज्य स्वामिसुतम् स्वामिसुतम् अरक्षत्। काले गते उदयसिंहः युवा अभवत्। सः वनवीरम् अदण्डयत्। चात्रीं च ताम् अपूजयत्। ततः च चित्रम् चर्मणा पूजाः अपनीयत।

धन्या सा स्वामिभक्ता पन्ना या स्वपुत्रम् दत्त्वा स्वामिसुतम् अरक्षत्।

अभ्यासः

१. अधोरेखाङ्कितपदानां स्थाने पाठात् चित्वा लिखत—

चात्री	धात्री
न्यवेशयत्	बैठा दिया
शयानम्	सोते हुए को
करण्डका	डलिया
निधाय	रख कर
भृत्यम्	नौकर
पर्यङ्के	पलंग

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

त्रयोविंशः पाठः

वर्णाः तेषाम् उच्चारण स्थानानि च

गुरुः — शिष्य संस्कृत कति वर्णाः सन्ति ?

शिष्यः — गुरो ! संस्कृते पञ्चाशत्वारिंशत् वर्णाः सन्ति। त्रयोदश स्वराः, पञ्चविंशतिः व्यञ्जनानि च। व्यञ्जनेषु पञ्चविंशतिः स्पर्शाः, चत्वारः अन्तस्थाः, चत्वारः ऊष्माः, अं अः द्वौ अयोगवाहौ च।

गुरुः — शिष्य ! स्वराणाम् किम् लक्षणम् अस्ति ?

शिष्यः — स्वेन रूपेण राजन्ते इति स्वराः। तेषाम् वर्णानाम् उच्चारणे उपकरणानाम् वर्णानाम् साहाय्यस्य अपेक्षा न भवति ते स्वराः सन्ति। तेषु 'अ, इ, उ, ऋ, ऌ' इति पञ्च ह्रस्वस्वराः। आ, ई, ऊ, ॠ, ॡ, ए, ओ, ऐ, औ इति अष्ट दीर्घस्वराः।

गुरुः — ओ शिष्य ! व्यञ्जनानि केषु सन्ति ?

शिष्यः — एषाम् वर्णानाम् उच्चारणम् स्वराणाम् साहाय्येन भवति तानि व्यञ्जनानि निगदन्ति। ते क्रमेण इदं भवन्ति —

स्पर्शाः — कवर्गः = कुः — क ख ग घ ङ
चवर्गः = चुः — च छ ज झ ञ
टवर्गः = टुः — ट ठ ड ढ ण
तवर्गः = तुः — त थ द ध न
पवर्गः = पुः — प फ ब भ म

अन्तस्थाः — य र ल व

ऊष्माः — श ष स ह

अनुस्वारः = ं, विसर्गः = ः (:).

गुरुः — वत्स ! एषाम् वर्णानाम् उच्चारण-स्थानानि किम् वर्तन्ते ?

शिष्यः — गुरो ! वर्णानाम् उच्चारण स्थानानि अधः

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

कथामात्र. शेषुत ।

अ, आ, इ, ई, ऋ, ऋ, ऌ, ऌ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः ।
उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, यान्त ।
क, ख, ग, घ, ङ, यान्त वर्णमाला ।
च, छ, ज, झ, ञ, यान्त दन्त्य ।
ट, ठ, ड, ढ, ण, यान्त तालव्य ।
त, थ, द, ध, न, यान्त मूर्धन्य ।
प, फ, ब, भ, म, यान्त ओष्ठ्य ।
य, र, ल, व, यान्त अन्तःस्थ ।
श, ष, स, यान्त ऊष्म ।
ह, यान्त महाप्राण ।
क्ष, त्र, ज्ञ, यान्त संयुक्ताक्षर ।

नोट :- मात्रु वर्ण मात्रा । स्वर व्यंजन मिलकर शब्द बनते हैं ।

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

ग्रंथ ∩ (
व्याकरण - पारिभाषिक

व्याकरण :- व्याकरण वह शास्त्र है जो हमें शुद्ध भाषण करना तथा शुद्ध लिखने का ज्ञान कराता है।

वर्ण :- वर्ण उस छोटे से छोटे ध्वनि को कहते हैं, जिस के और खण्ड न हो सके।

वर्णमाला

स्वर { अ, इ, उ, ऋ, ऌ — ह्रस्वस्वर
आ, ई, ऊ, ॠ, ॡ, ए, ऐ, ओ, औ — दीर्घस्वर

व्यञ्जन :-

स्पर्श -
कवर्ग (=क्) - क् ख् ग् घ् ङ्
चवर्ग (=च्) - च् छ् ज् झ् ञ्
टवर्ग (=ट्) - ट् ठ् ड् ढ् ण्
तवर्ग (=त्) - त् थ् द् ध् न्
पवर्ग (=प्) - प् फ् ब् भ् म्

अन्तःस्थ - य् र् ल् व्

ऊष्म - श् ष् स् ह्

अयोगवाह - ं (अनुस्वार), ः (विसर्ग).

उच्चारण-स्थान

कण्ठ

उच्चारण स्थान	स्वर	व्यञ्जन		
		स्पर्श	अन्तःस्थ	ऊष्म
कण्ठ	अ, आ	क् ख् ग् घ् ङ्	-	ह्, (:)
तालु	इ, ई	च् छ् ज् झ् ञ्	य्	श्
मूर्धा	ऋ, ॠ	ट् ठ् ड् ढ् ण्	र्	ष्
दन्त	ऌ	त् थ् द् ध् न्	ल्	स्
ओष्ठ	उ, ऊ	प् फ् ब् भ् म्	-	-
कण्ठतालु	ए, ऐ	—	-	-
कण्ठोष्ठ	ओ, औ	—	-	-
दन्तोष्ठ	—	—	व्	-
नासिका	-	ं (अनुस्वार)		

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

कारक

कारक :- वाक्य में जिस के साथ क्रिया का अन्वय होता है उसे कारक कहते हैं। जैसे 'बालकः पठति'। इस वाक्य में 'पठति' क्रिया का अन्वय 'बालकः' के साथ है। इस लिये बालकः कारक है। इसी प्रकार 'नृपः ब्राह्मणाभ्यः धनम् यच्छति' इस वाक्य में 'नृपः', 'ब्राह्मणाभ्यां' तथा 'धनम्' कारक हैं।

कारक छः होते हैं :—

१ - कर्ता, २ - कर्म, ३ - करण, ४ - सम्प्रदान, ५ - अपादान, ६ - अधिकरण।

नोट :- 'सम्बन्ध' तथा 'सम्बोधन' का क्रिया के साथ कोई अन्वय नहीं होता - जैसे रामस्य पुस्तकम् (राम की पुस्तक), हे राम! इस लिये 'सम्बन्ध' तथा 'सम्बोधन' कारक नहीं कहलाते।

विभक्ति :- जिस प्रत्यय से वचन और कारक का बोध हो उसे विभक्ति कहते हैं। जैसे नरः = एक मनुष्य ने। नरौ = दो मनुष्यों ने। नराः = बहु मनुष्यों ने।

विभक्तियां सात होती हैं :—

१ प्रथमा, २ - द्वितीया, ३ - तृतीया, ४ - चतुर्थी, ५ - पञ्चमी, ६ - षष्ठी, ७ - सप्तमी।

	कारक	विभक्ति	
१.	कर्ता	प्रथमा	ने,
२.	कर्म	द्वितीया	को
३ -	करण	तृतीया	से, के द्वारा
४.	सम्प्रदान	चतुर्थी	के लिये
५.	अपादान	पञ्चमी	से
६.	(सम्बन्ध)	षष्ठी	का, के, की
७ -	अधिकरण	सप्तमी	में, पर
८.	(सम्बोधन)	प्रथमा	हे, अरे

वचन

संस्कृत में तीन वचन होते हैं :—

१ - एकवचन, २ - द्विवचन, ३. बहुवचन.

एक के लिये एकवचन का प्रयोग होता है। जैसे - बालः गच्छति।
दो के लिये द्विवचन का प्रयोग होता है। जैसे — बालौ गच्छतः।
तीन तथा उस से अधिक के लिये बहुवचन का प्रयोग होता है।
जैसे बालाः गच्छन्ति।

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

शब्द रूप

बाल (= बालक)

अकारान्त पुंल्लिङ्ग

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
कर्ता - प्रथमा	बालः	बालौ	बालाः
कर्म - द्वितीया	बालम्	बालौ	बालान्
करण - तृतीया	बालेन	बालाभ्याम्	बालैः
सम्प्रदान - चतुर्थी	बालाय	बालाभ्याम्	बालेभ्यः
अपादान - पञ्चमी	बालात्	बालाभ्याम्	बालेभ्यः
सम्बन्ध - षष्ठी	बालस्य	बालयोः	बालानाम्
अधिकरण - सप्तमी	बाले	बालयोः	बालेषु
सम्बोधन	हे बाल!	हे बालौ!	हे बालाः!

अकारान्त नपुंसकलिङ्ग

कर्ता - प्रथमा	फलम्	फले	फलानि
कर्म - द्वितीया	फलम्	फले	फलानि

(देव बाल की तरह).

आकारान्त स्त्रीलिङ्ग

बाला (= लड़की)

प्रथमा	बाला	बाले	बालाः
द्वितीया	बालाम्	"	"
तृतीया	बालया	बालाभ्याम्	बालाभिः
चतुर्थी	बालायै	"	बालाभ्यः
पञ्चमी	बालायाः	"	"
षष्ठी	"	बालयोः	बालानाम्
सप्तमी	बालायाम्	"	बालासु
सं०	हे बाले!	हे बाले!	हे बालाः!

इकारान्त पुंल्लिङ्ग

मुनि

प्रथमा	मुनिः	मुनी	मुनयः
द्वितीया	मुनिम्	"	मुनीन्
तृतीया	मुनिना	मुनिभ्याम्	मुनिभिः
चतुर्थी	मुनये	"	मुनिभ्यः
पञ्चमी	मुनेः	"	"
षष्ठी	"	मुन्योः	मुनीनाम्
सप्तमी	मुनौ	"	मुनिषु
सं०	हे मुने!	हे मुनी!	हे मुनयः!

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

3कारान्त पुंल्लिङ्ग

सानु (= सज्जन पुरुष)

प्रथमा	सानुः	सानू	सानवः
द्वितीया	सानुम्	सानू	सानून्
तृतीया	सानुना	सानुभ्याम्	सानुभिः
चतुर्थी	सानवे	"	सानुभ्यः
पञ्चमी	सानोः	"	"
षष्ठी	"	सानवोः	सानूनाम्
सप्तमी	सानौ	"	सानुषु
सं०	हे सानो!	हे सानू!	हे सानवः!

इकारान्त नपुंसकलिङ्ग

वारि (= जल)

प्रथमा	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वितीया	"	"	"
तृतीया	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
चतुर्थी	वारिणे	"	वारिभ्यः
पञ्चमी	वारिणः	"	"
षष्ठी	"	वारिणोः	वारीणाम्
सप्तमी	वारिणि	"	वारिषु
सं०	हे वारे! हे वारि!	हे वारिणी!	हे वारीणि!

इकारान्त नपुंसकलिङ्ग

दधि (= दही)

प्रथमा	दधि	दधिनी	दधीनि
द्वितीया	"	"	"
तृतीया	दध्ना	दधिभ्याम्	दधिभिः
चतुर्थी	दध्ने	"	दधिभ्यः
पञ्चमी	दध्नः	"	"
षष्ठी	"	दध्नोः	दधीनाम्
सप्तमी	दधिनि, दध्नि	"	दधिषु
सं०	हे दधे! हे दधि	हे दधिनी!	हे दधीनि!

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

3 कारान्त नपुंसकलिङ्ग

मधु (= मधु)

कर्ता -	प्रथमा	मधु	मधुनी
कर्म -	द्वितीया	"	मधूनि
करण -	तृतीया	मधुना	मधुभ्याम्
सम्प्रदान -	चतुर्थी	मधने	मधुभ्यः
अपादान -	पञ्चमी	मधुनः	"
सम्बन्ध	षष्ठी	"	मधुनाम्
अधिकरण	सप्तमी	मधनि	मधुषु
सं०		हे मधो! हे मधु!	हे मधुनी! हे मधूनि!

सर्वनाम

पुंल्लिङ्ग - सर्व (= सब)

	प्रथमा	सर्वः	सर्वौ
	द्वितीया	सर्वम्	"
	तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्
	चतुर्थी	सर्वस्मै	"
	पञ्चमी	सर्वस्मात्	"
	षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः
	सप्तमी	सर्वस्मिन्	"

नपुंसकलिङ्ग

प्रथमा	सर्वम्	सर्व	सर्वाणि
द्वितीया	"	"	"

शेष पुंल्लिङ्ग वत्

पुं० - किम्

	प्रथमा	कः	कौ
	द्वितीया	कम्	"
	तृतीया	केन	काभ्याम्
	चतुर्थी	कस्मै	"
	पञ्चमी	कस्मात्	"
	षष्ठी	कस्य	कयोः
	सप्तमी	कस्मिन्	"

के	कान्	
"	"	
कैः	कैः	
कभ्यः	"	
"	"	
केषाम्	केषु	

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

नपुंसकलिङ्ग

प्रथमा + द्वितीया	किम्	किनी	कीनि
तृतीया	"	"	"
शेष	पुंल्लिङ्ग; वत्		

पुं० तद् (= वह)

प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	"	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	"	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्	"	"
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	"	तेषु

नपुंसकलिङ्ग

प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	"	"	"
शेष	पुंल्लिङ्ग; वत्		

पुं० यद् (= जो)

प्रथमा	यः	यौ	ये
द्वितीया	यम्	"	यान्
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	"	येभ्यः
पञ्चमी	~~यस्मिन्~~ यस्मात्	"	"
षष्ठी	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन्	"	येषु

नपुंसकलिङ्ग

प्रथमा	यत्	ये	यानि
द्वितीया	"	"	"
शेष	पुंल्लिङ्ग; वत्		

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

अस्मद्

प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्	"	अस्मान्
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्	"	अस्मभ्यम्
पञ्चमी	मत्	"	अस्मत्
षष्ठी	मम	आवयोः	अस्माकम्
सप्तमी	मयि	"	अस्मासु

युष्मद्

प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्	युवाम्	युष्मान्
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्	"	युष्मभ्यम्
पञ्चमी	त्वत्	"	युष्मत्
षष्ठी	तव	युवयोः	युष्माकम्
सप्तमी	त्वयि	"	युष्मासु

तिङन्त

काल

संस्कृत में तीन काल होते हैं :—

१ — भूतकाल
२ — वर्तमान काल
३ — भविष्यत काल

भूतकाल के लिये लङ् लकार का प्रयोग होता है।
वर्तमान काल के लिये लट् लकार का प्रयोग होता है।
भविष्यत काल के लिये लृट् लकार का प्रयोग होता है।
इन के अतिरिक्त आज्ञा आदि के अर्थ में लोट् लकार, आशीर्वाद आदि के अर्थ में विधिलिङ् का प्रयोग होता है।

पुरुष

तीन पुरुष होते हैं —

१ - प्रथम पुरुष
२ - मध्यम पुरुष
३ - उत्तम पुरुष

प्रत्येक पुरुष में तीन तीन वचन होते हैं। एकवचन द्विवचन तथा बहुवचन।

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

संस्कृत में तीनों लिङ्गों के लिये एक ही क्रिया का प्रयोग होता है।

धातु रूप

स्वादि गण → पठ् = पढ़ना

लट् लकार (वर्तमान काल) के प्रत्यय

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ति	तः	न्ति
मध्यम पुरुष	सि	थः	थ
उत्तम पुरुष	मि	वः	मः

लट् लकार के रूप

प्रथम पुरुष	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यम पुरुष	पठसि	पठथः	पठथ
उत्तम पुरुष	पठामि	पठावः	पठामः

लङ् लकार (भूतकाल) के प्रत्यय

प्रथम पुरुष	त्	ताम्	अन्
मध्यम पुरुष	:	तम्	त
उत्तम पुरुष	अम्	आव	आम

लङ् लकार के रूप

सूचना :- लङ् लकार धातु से पहले अ जोड़ा जाता है।

प्रथम पुरुष	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
मध्यम पुरुष	अपठः	अपठतम्	अपठत
उत्तम पुरुष	अपठम्	अपठाव	अपठाम

लोट् लकार के प्रत्यय

प्रथम पुरुष	तु	ताम्	अन्तु
मध्यम पुरुष	–	तम्	त
उत्तम पुरुष	आनि	आव	आम

लोट् लकार के रूप

प्रथम पुरुष	पठतु	पठताम्	पठन्तु
मध्यम पुरुष	पठ	पठतम्	पठत
उत्तम पुरुष	पठानि	पठाव	पठाम

विधिलिङ् के प्रत्यय

प्रथम पुरुष	एत्	एताम्	एयुः
मध्यम पुरुष	एः	एतम्	एत
उत्तम पुरुष	एयम्	एव	एम

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

अस्मद्

प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्	"	अस्मान्
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्	"	अस्मभ्यम्
पञ्चमी	मत्	"	अस्मत्
षष्ठी	मम	आवयोः	अस्माकम्
सप्तमी	मयि	"	अस्मासु

युष्मद्

प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्	युवाम्	युष्मान्
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्	"	युष्मभ्यम्
पञ्चमी	त्वत्	"	युष्मत्
षष्ठी	तव	युवयोः	युष्माकम्
सप्तमी	त्वयि	"	युष्मासु

तिङन्त

काल

संस्कृत में तीन काल होते हैं :—

1 — भूतकाल
2 — वर्तमान काल
3 — भविष्यत काल

भूतकाल के लिये लङ् लकार का प्रयोग होता है।
वर्तमान काल के लिये लट् लकार का प्रयोग होता है।
भविष्यत काल के लिये लृट् लकार का प्रयोग होता है॥
इन के अतिरिक्त आज्ञा आदि के अर्थ में लोट् लकार, आशीर्वाद आदि के अर्थ में विधिलिङ् का प्रयोग होता है।

पुरुष

तीन पुरुष होते हैं —

1 - प्रथम पुरुष
2 - मध्यम पुरुष
3. उत्तम पुरुष

प्रत्येक पुरुष में तीन तीन वचन होते हैं। एकवचन द्विवचन तथा बहुवचन।

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

संस्कृत में तीनों लिङ्गों के लिये एक ही क्रिया का प्रयोग होता है।

धातु रूप

स्वादि गण — पठ् = पढ़ना

लट् लकार (वर्तमान काल) के प्रत्यय

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	ति	तः	न्ति
मध्यम पुरुष	सि	थः	थ
उत्तम पुरुष	मि	वः	मः

लट् लकार के रूप

प्रथम पुरुष	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यम पुरुष	पठसि	पठथः	पठथ
उत्तम पुरुष	पठामि	पठावः	पठामः

लङ् लकार (भूतकाल) के प्रत्यय

प्रथम पुरुष	त्	ताम्	अन्
मध्यम पुरुष	:	तम्	त
उत्तम पुरुष	अम्	आव	आम

लङ् लकार के रूप

सूचना :- लङ् लकार धातु से पहले अ जोड़ा जाता है।

प्रथम पुरुष	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
मध्यम पुरुष	अपठः	अपठतम्	अपठत
उत्तम पुरुष	अपठम्	अपठाव	अपठाम

लोट् लकार के प्रत्यय

प्रथम पुरुष	तु	ताम्	अन्तु
मध्यम पुरुष	–	तम्	त
उत्तम पुरुष	आनि	आव	आम

लोट् लकार के रूप

प्रथम पुरुष	पठतु	पठताम्	पठन्तु
मध्यम पुरुष	पठ	पठतम्	पठत
उत्तम पुरुष	पठानि	पठाव	पठाम

विधिलिङ् के प्रत्यय

प्रथम पुरुष	इत्	इताम्	इयुः
मध्यम पुरुष	ईः	इतम्	इत
उत्तम पुरुष	इयम्	इव	इम

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

लिङ् लकार के रूप

प्रथम पुरुष	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
मध्यम पुरुष	पठेः	पठेतम्	पठेत
उत्तम पुरुष	पठेयम्	पठेव	पठेम

लृट् लकार (भविष्यत् काल) के प्रत्यय

प्रथम पुरुष	स्यति	स्यतः	स्यन्ति
मध्यम पुरुष	स्यसि	स्यथः	स्यथ
उत्तम पुरुष	स्यामि	स्यावः	स्यामः

लृट् लकार के रूप

सूचना :- लट् लकार में कुछ धातुओं में प्रत्यय के पहले 'इ' जोड़ दिया जाता है और इसी कारण से स्यति का ध्यति हो जाता है, जैसे पठ + इ + ध्यति = पाठ्यति। ऐसी धातुओं को लृट् धातुयें कहते हैं। जिन धातुओं में प्रत्यय के पहले 'इ' नहीं जोड़ा उन्हें ग्लान्ट धातु कहते हैं।

प्रथम पुरुष	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उत्तम पुरुष	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

पठ, ~~[illegible]~~, खेल, क्रीड, वद, चर, हस, चल, रक्ष, गै (गा), स्मर, भाष, रुच, भ्रम, पचादि धातुओं के रूप भी लट्, पचादि लकारों में पठ धातु की तरह दो जाते हैं।

कुछ धातु रूप हैं जो लट्, लङ्, लोट् तथा विधिलिङ् में बदल जाते हैं। जैसे गम् को गच्छ, पा को पिब, स्था को तिष्ठ, दा को यच्छ, दृश् को पश्य, धातु रूप में हो रहते हैं। उन धातुओं के प्रथम पुरुष एकवचन के रूप सब लकारों में दिये जाते हैं।

धातु	लट्	लङ्	लोट्	विधिलिङ्	लृट्
गम् - गच्छ	गच्छति	अगच्छत्	गच्छतु	गच्छेत्	गमिष्यति
पा - पिब	पिबति	अपिबत्	पिबतु	पिबेत्	पास्यति
स्था - तिष्ठ	तिष्ठति	अतिष्ठत्	तिष्ठतु	तिष्ठेत्	स्थास्यति
दा - यच्छ	यच्छति	अयच्छत्	यच्छतु	यच्छेत्	दास्यति
दृश् - पश्य	पश्यति	अपश्यत्	पश्यतु	पश्येत्	द्रक्ष्यति

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

तुदादिगण

तुदादिगण में सभी धातु 'परस्मैपद' के रूप में 'प' विकरण वाले हैं। इसे कर्तरि प्रयोग है, कि जहां स्वादिगण की धातु 'प' के पहिले तथा अन्तिम वर्ण के पहले 'य' हो 'इ' 'उ' तथा ऋ को 'अय्', 'आय्' तथा 'आर्' हो जाता है, वहां तुदादिगण में ऐसा नहीं होता।

उदाहरण के लिये — लि + प + ति → ल् + प + ति → अय् + प + ति = अयति। परन्तु तुद् + प + ति = तुदति

तुद् = दः सकार

लट् लकार

प्रथम पुरुष	तुदति	तुदतः	तुदन्ति
मध्यम पुरुष	तुदसि	तुदथः	तुदथ
उत्तम पुरुष	तुदामि	तुदावः	तुदामः

लङ् लकार

प्र० पु०	अतुदत्	अतुदताम्	अतुदन्
म० पु०	अतुदः	अतुदतम्	अतुदत
उ० पु०	अतुदम्	अतुदाव	अतुदाम

लोट् लकार

प्र० पु०	तुदतु	तुदताम्	तुदन्तु
म० पु०	तुद	तुदतम्	तुदत
उ० पु०	तुदानि	तुदाव	तुदाम

विधिलिङ्

प्र० पु०	तुदेत्	तुदेताम्	तुदेयुः
म० पु०	तुदेः	तुदेतम्	तुदेत
उ० पु०	तुदेयम्	तुदेव	तुदेम

लृट् लकार

प्र० पु०	तोत्स्यति	तोत्स्यतः	तोत्स्यन्ति
म० पु०	तोत्स्यसि	तोत्स्यथः	तोत्स्यथ
उ० पु०	तोत्स्यामि	तोत्स्यावः	तोत्स्यामः

तिरु, क्षिप्, मिल्, स्पृश्, इष् (इच्छ), पच् (पच्), आदि तुदादिगण की अन्य धातुओं के रूप भी इसी प्रकार जानने चाहिये।

दिवादिगण

दिवादिगण में 'य' विकरण आता है जैसे दिव् + य + ति = दीव्यति, नृत् + य + ति = नृत्यति, नश् + य + ति = नश्यति

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

लट् लकार

प्र० पु०	दृश्यते	दृश्येते	दृश्यन्ते
म० पु०	दृश्यसे	दृश्येथे	दृश्यध्वे
उ० पु०	दृश्ये	दृश्यावहे	दृश्यामहे

लङ् लकार

प्र० पु०	अदृश्यत	अदृश्येताम्	अदृश्यन्त
म० पु०	अदृश्यथाः	अदृश्येथाम्	अदृश्यध्वम्
उ० पु०	अदृश्ये	अदृश्यावहि	अदृश्यामहि

लोट् लकार

प्र० पु०	दृश्यताम्	दृश्येताम्	दृश्यन्ताम्
म० पु०	दृश्यस्व	दृश्येथाम्	दृश्यध्वम्
उ० पु०	दृश्यै	दृश्यावहै	दृश्यामहै

वि० लिङ्

प्र० पु०	दृश्येत	दृश्येयाताम्	दृश्येरन्
म० पु०	दृश्येथाः	दृश्येयाथाम्	दृश्येध्वम्
उ० पु०	दृश्येय	दृश्येवहि	दृश्येमहि

लृट् लकार

प्र० पु०	द्रष्टा	द्रष्टारौ	द्रष्टारः
म० पु०	द्रष्टासे	द्रष्टासाथे	द्रष्टाध्वे
उ० पु०	द्रष्टास्मि	द्रष्टास्वः	द्रष्टास्मः

आशीर्लिङ् गण

आशीर्लिङ् में प्रथम विकरण श्यन् है। जैसे युध् + श्यन् + त
= योध् + य + त = योधयति।

लृट् लकार युध् = युद्ध

प्र० पु०	योधयिता	योधयितारौ	योधयितारः
म० पु०	योधयिता	योधयितासाथे	योधयिताध्वे
उ० पु०	योधयिताहे	योधयितास्वः	योधयितास्मः

लङ् लकार

प्र० पु०	अयोधयत्	अयोधयताम्	अयोधयन्
म० पु०	अयोधयः	अयोधयतम्	अयोधयत
उ० पु०	अयोधयम्	अयोधयाव	अयोधयाम

लोट् लकार

प्र० पु०	योधयतु	योधयताम्	योधयन्तु
म० पु०	योधय	योधयतम्	योधयत
उ० पु०	योधयानि	योधयाव	योधयाम

वि० लिङ्

प्र० पु०	योधयेत्	योधयेताम्	योधयेयुः
म० पु०	योधयेः	योधयेतम्	योधयेत
उ० पु०	योधयेयम्	योधयेव	योधयेम

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

	एक	द्वि	बहु
प्र० पु०	पाराशर्यः	पाराशर्यौ	पाराशर्याः
म० पु०	पाराशर्यम्	पाराशर्यौ	पाराशर्यान्
उ० पु०	पाराशर्येण	पाराशर्याभ्याम्	पाराशर्यैः

जाए, नाड़, चिन्न, दंड आदि शब्दों के रूप भी इसी प्रकार जानने चाहिए।

५. सरल वाक्यों के रूपांतर, अनुवाद, टुकड़ों का प्रयोग।

६. इन उपयोगी शब्दों का प्रयोग:— पुत्र, नेत्र, मित्र, वर्षा, नदी, कमल, कवि, रवि, पति, पत्नी, अहं, यूयं, एकः, द्वौ, त्रयः, एकम्, द्वे, त्रीणि

७. दिए गए संस्कृत वाक्यों का शुद्ध उच्चारण, शुद्ध वाचन (Recitation)

८. कुछ सुभाषित और सूक्तियों का कण्ठस्थ करना।

९. सरल हिंदी से संस्कृत में तथा सरल संस्कृत से हिंदी में अनुवाद।

नोट :— इस सूची के लिये एक ऐसे ६४ टुकड़ों की चाहिए जिनमें ऊपर दिए गए शब्द, रूप के उदाहरण हों। इनके विषय, व्याकरण तथा प्रयोग की शिक्षा क्रमवार दी जाय। व्याकरण की शिक्षा पाठ्य पुस्तक से होगी। इस सूची में पढ़ाये हुए व्याकरण की विषय पाठ्य पुस्तक में पृष्ठ संख्या में तथा पुस्तक के नाम में संकेत के आधार में दिया जाय।

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

Syllabus in SANSKRIT

Class VI

1. वर्णविचार, पदों तथा मात्राओं का पूर्ण ज्ञान। विकारों को बचाने वाले सूत्र।

2. स्वरान्त शब्दों के रूप सब कारकों में :—
   (1) अकारान्त - पुल्लिंग और नपुंसकलिंग में।
   (2) इकारान्त और उकारान्त पुं० और नपुं० में।
   (3) ऋकारान्त स्त्रीलिंग में।

3. सर्वनाम (1) सर्व, तद्, इदम्, अद् पुं० व नपुं० में।
   (2) अस्मद् और युष्मद्।

4. बीस तक गिनना बालकशब्दों का साधारण ज्ञान।

5. त्रीणि, त्रीणी, चत्वारि, पञ्चादि गणों की मुख्यमुख्य, सरल धातुओं के रूप वद्, गम्, हन्, और स्मृ धातु में।

6. भूतकाल में व्यञ्जनान्त धातुओं के रूप—
   वद्, गम्, हन्, दा, धा, ज्ञा, स्था।

7. सरल उपसर्गों का धातुओं के साथ प्रयोग।

8. सरल धातुओं के रूप, अर्थ, कृदन्तों का प्रयोग।

9. इन उपयोगी शब्दों का प्रयोग :— पुत्र, नेत्र, पुत्री, मया, नया, कथम्, कदा, तदा, यदा, यद्, यदि, अद्य, श्वः, ह्यः, एकदा, सदा, उपरि।

10. सरल सरल संस्कृत पद्यों का शुद्ध उच्चारण पूर्वक सस्वर पाठ (Recitation)

11. दस सुभाषित और सूक्तियों का कण्ठस्थ करना।

12. सरल हिन्दी से संस्कृत में तथा सरल संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद।

नोट :— इस श्रेणी के लिये एक ऐसी ६४ पृष्ठों की पाठ्य पुस्तक नियत की जाय जिसमें ऊपर दिये गये सब विषयों का क्रम के अनुसार पद्य संस्कृत के पाठ्य विषय, व्याकरण तथा अनुवाद के लिये क्रमवार दो उदाहरणों की पूर्ण पुस्तक हो। इस श्रेणी में पढ़ाये गये व्याकरण का विषय पाठ्य पुस्तक में पद्यों के अन्त में तथा गद्य पुस्तक के अन्त में संकेत से यथास्थान में दिया जाय।

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection

Digtized by Sarayu Trust Foundation and eGangotri

CC-0. In Public Domain. S.V. Shastri Collection